समन्वय

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति ।

अष्टम वर्ष

(सौर माघ सं० १९८५—सौर पौष सं० १९८६)

ई० सन् १९२९ ।

—※—

समन्वय कार्य्यालय ।

१८२ ए, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता ।

वार्षिक मूल्य ३)] [प्रति संख्या ।=)

आठवाँ वर्ष को विषय-सूची।

विषय	लेखक	पृष्ठ
अंगुलीमाला (कहानी)	स्वामी अतुलानन्द	१३२
अनादर. (कविता)	ठा० कृपानारायण सिंह	४०८
अनित्यता (कविता)		१२३
अनुरोध (कविता)	श्रीकामेश्वर शर्मा	१३१
आधुनिक अवतार—रामकृष्ण	रोमा रोलां	४७१, ५१४
आवश्यक भूमि (कहानी)		४५०
ईश्वर के प्रति (कविता)	'प्राण'	३२६
ईश्वर तथा हिन्दु-करण	पं० सकलनारायण शर्मा	३६
उपास्यदेव	पं० हनुमान शर्मा चौमूं	४०९
करुणा के गीत (कविता)	शिवदेव उपाध्याय	१८६
'काम एष, क्रोध एष' (कहानी)	श्रीगोपालचन्द्र	५५८
क्या भारतवासी सभ्य हैं ?	पं० नरदेव शास्त्री	३१३
गीता-तत्त्व	स्वामी सारदानन्द	५०४, ५६५
गोपीचन्द भर्तृहरि (कहानी)	श्री आनन्दकुमार जैन	४०२
छल (कविता)	श्री सत्यव्रत शर्मा	२११
जर्मनी में बौद्धधर्म की चर्चा	मुं० नवजादिकलाल श्रीवास्तव	२१६
जादूगर	स्वामी अतुलानन्द	८२
जीवन–सङ्गीत (कविता)	श्री अनन्तविहारी माथुर	२१८
जुल्म की बुनियाद (कहानी)	पं० कालिका प्रसाद चतुर्वेदी	२७
तिरस्कार	वालकृष्ण बलदुवा	१८७
तू (कविता)	पं० सत्यव्रत शर्मा	११३
तुकाराम-वचनावली	...	३२७
धर्माचार-गत जाति	पं० सकलनारायण शर्मा	.... १२४

नववर्ष ...	...	१
'नाथ! अब धर्म की' (कविता)	कल्याणकुमार	३९३
न्याय-विचार (कहानी)	बोधिप्रिय	२२१
परमहंस श्रीरामकृष्ण	पं० विद्याभास्कर शुक्ल	३५६
परिव्राजक	स्वामी विवेकानन्द	२०, ५८, १०५,
		१५६ २०४, २५१, २९८, ३४५,
		३९४, ४४१, ४९३, ५४४
पूजा का फल (कहानी)	पं० भंवरराज केशरी	२७४
पुजारीजी (कहानी)	श्री अरुणकुमार चट्टोपाध्याय	२६६
पुस्तक परिचय		४७, ९४, १४२, १८९,
		२३५, २८५, ३८०
प्रतीक्षा (कविता) ...	...	५७
प्रभाती ...	निराल	१५५
प्राच्यधर्म-प्रणाली ...	...	३५२
भारतीय दर्शन का लक्ष्य	श्री शिवशेखर द्विवेदी	२५८
भिक्षुक के प्रति (कविता)	चतुर्वेदी उमराव सिंह पांडेय	५०३
मन और प्रवृत्तियां	पं० राजाराम पांडेय	१७७
मणिमाला		४३, ९२, १३९, १८८,
		२३१, २८१, ३३०, ३७८, ४१८,
		४७६, ५२४, ५७१
मानवी इच्छा (कहानी)	...	३२४
मायावी भक्त	गुप्त ...	२१२
मेरी वाटिका (कविता)	अवन्त	५५७
मृत्यु	श्री बनारसी प्रसाद	४१४
युगावतार भगवान श्रीरामकृष्ण	पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी	१६४
विचित्र उलझन (कविता)	ठा० रघुवेश्वरप्रसाद सिंह	४९२

विचित्र व्यापार (कविता)	श्री शारदाप्रसाद भंडारी	२०३
विराग (कविता)	पं० कृष्णदत्त भारद्वाज	३१६
विराट के पथपर (कविता)	श्री ब्रजकिशोर वर्मा	४१८
विविध विषय		४८, ९५, १४४, १९०, २३६, २८५, ३३३, ३८१, ४२३, ४७८, ५२६, ५७३
वेदान्तकेशरी स्वामी विवेकानन्द	पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी	६७
वेदों में दिशाओं का मानसिक ध्यान	पं० रामप्रसाद पांडेय	३१४
वेदों के साथ गीता का सामंजस्य	श्री शिवशेखर द्विवेदी	३७०
शक्ति की उपासना	स्वामी विजयानन्द	३७४
श्रीरामकृष्णवचनामृत		७, ४९, ९७, १४३, १९१, २३९, २८७, ३३५, ३८३, ४३१, ४७९, ५२७
सब उन्हीं का (कविता)	महाकवि अकबर	१०४
सनातनधर्म और परमहंस श्रीरामकृष्ण	स्वामी मेधेश्वरानन्द	२६४
सागर के वक्षपर (कविता)	स्वामी विवेकानन्द	३६९
साधु	पं० कालिकाप्रसाद चतुर्वेदी	३२२
स्रष्टा और सृष्टि	पांडेय राजाराम शास्त्री	३०८
स्वामी तुरीयानन्द महाराजकी स्मृति,	पं० रामशंकर मेहता	३४
हठयोग के आसन		३१७
हिन्दुधर्म की विशेषता	पं० प्रमथनाथ तर्कभूषण	११४
हिन्दूमत मानिये (कविता)	रसिक	६६
हे भगवान (कविता)	शिवदेव उपाध्याय	२१२

समन्वय

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् ।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥
—गीता

वर्ष ८] सौर माघ, संवत् १९८५ [अङ्क १

नव वर्ष

उस करुणामय की असीम कृपा से समन्वय अपने जीवन के सात वर्ष पूरे कर इस अंक से आठवें वर्ष में नई आशाओं और नई उमंगों के साथ पदार्पण कर रहा है। इस समय उस परम पिता परमेश्वर को प्रणाम करना और उसके जीवों के प्रति प्रेम प्रदर्शित करना हमारा आवश्यक कर्तव्य है। हमारी प्रार्थना है कि उस विश्व-नियामक के नियन्त्रण में मानव समाज परस्पर सहानुभूति और प्रेम प्रकाशित करता हुआ, सत्य और सेवा के मार्ग पर अग्रसर होता रहे। साथ ही इस अवसर पर समन्वय के दयालु पाठकों को भी धन्यवाद देना हमारा परम कर्तव्य है, जिनकी सहायता और सहानुभूति से वह अपने जीवन के सात वर्ष व्यतीत कर सका और जिनके सहारे उसे अपने मार्ग पर अग्रसर होने की आशा ही नहीं दृढ़ विश्वास भी है।

अपने इस छोटे से जीवन काल में समन्वय ने अपने कृपालु पाठकों के सामने उस महान् भारतीय आदर्श को रखने में कोई बात उठा नहीं रखी, जिस आदर्श को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये भारतीयों ने कई शताब्दियों से निरन्तर प्रयत्न किया है। वर्तमान भारत दो परस्पर विरोधिनी सभ्यताओं के बीच चल रहा है। एक ओर उसकी प्राचीन

संग्रहणी २४०

कुल जोड़—३२०५

१९२८ से आय व्यय का विवरण

आय		रु०	आ०	पा०
गत वर्ष की बचत	...	२५३०	१५	४
एक कालीन सहायता	...	६४५	८	०
सूद	...	१०८	०	०
कुल जोड़		३२८४	७	४

व्यय		रु०	आ०	पा०
दवा	...	३२७	७	०
कार्यकर्ताओं का भोजनादि		३६०	०	०
औजार आदि	...	११४	१३	०
मुल्की भाड़ा	...	६	१२	६
कुल जोड़		८०६	०	६
बचत		२४७५	६	१०

रोगियों की संख्या, जिन्हें अस्पताल में रखकर चिकित्सा करने की आवश्यकता पड़ती है निरन्तर बढ़ रही है। इस समय चिकित्सालय में जो स्थान है वह कदापि उनके लिये पर्याप्त नहीं है। इस समय चार ही रोगियों को रखने का प्रबन्ध है, इसलिये कम से कम चार और रोगियों के रखने का प्रबन्ध कर देना नितान्त अवश्यक है। इस प्रबन्ध में साधारणतः पांच हजार रुपये अवश्य लगेंगे।

ऐसे निर्जन स्थान में इस चिकित्सालय की कितनी उपयोगिता है इस बात को समझते हुए, हमें आशा ही नहीं दृढ़ विश्वास है कि दयालु सहृदय आर्थिक सहायता के लिये इस काम को कदापि अधूरा न रहने देंगे।

सहायता की रकम चाहे कितनी ही कम क्यों न हो निम्न लिखित पतेपर सधन्यवाद स्वीकृत होगी—

स्वामी वीरेश्वरानन्द
अध्यक्ष अद्वैत आश्रम
पोष्ट मायावती, जिला अलमोड़ा, संयुक्त प्रान्त

समन्वय

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।
मम वर्त्मानुवर्त्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः॥ —गीता।

वर्ष ८] सौर कार्तिक, सम्वत् १९८६ [अङ्क ~~६~~ १०

श्रीरामकृष्णवचनामृत।

इक्कीसवां परिच्छेद।

(१)

श्रीरामकृष्ण बलराम के दुतल्ले के बैठकखाने में भक्तों के बीच में प्रसन्नतापूर्वक बैठे हुए उन से वार्तालाप कर रहे हैं। नरेन्द्र, मास्टर, भवनाथ, पूर्ण, पल्टू, छोटे नरेन, गिरीश, रामबाबू, द्विज, विनोद आदि बहुत से भक्त चारों ओर से घेरकर बैठे हुए हैं।

आज शनिवार है। दिन के तीन बजे होंगे। बैशाख की कृष्णा दशमी है। ९ मई, १८८५।

बलराम घरमें नहीं हैं। शरीर अस्वस्थ होनेके कारण वायुपरिवर्तनके लिये मुंगेर गये हुए हैं। उनकी बड़ी कन्याने श्रीरामकृष्ण और भक्तोंको बुलाकर महोत्सव किया है। भोजन के पश्चात श्रीरामकृष्ण जरा विश्राम कर रहे हैं।

श्रीरामकृष्ण मास्टर से बार बार पूछ रहे हैं, 'बताओ तो सही, क्या मैं उदार हूं ?' भवनाथ ने हंसकर कहा, ये और क्या कहेंगे, चुप रहने के सिवा ?

एक हिन्दोस्तानी भिक्षुक गाने के लिये आया। भक्तों ने दो

गाने सुने। गाने नरेन्द्रको अच्छे लगे। उन्होंने गानेवाले से कहा फिर गाओ।

श्रीरामकृष्ण। बस बस, अब रहने दो, पैसे कहां हैं ?—(नरेन्द्रसे) —कह तो दिया तू ने।

भक्त (हंसकर)। महाशय, आपको इसने अमीर समझा है। आप तकिये के सहारे बैठे हुए हैं न—(सब हंसते हैं)

श्रीरामकृष्ण (सहास्य) यह भी तो सोच सकता है कि बीमार है।

हाजरा के अहंकार की बात होने लगी। किसी कारण से दक्षिणेश्वर के काली मन्दिर से हाजरा को चला आना पड़ा था।

नरेन्द्र। हाजरा अब मानता है कि उसे अहंकार हुआ था।

श्रीरामकृष्ण। इस बात पर विश्वास न करना। दक्षिणेश्वर में फिर से जाने के लिये उस तरह की बातें कह रहा होगा (भक्तों से) नरेन्द्र केवल यही कहता है कि हाजरा मजहब का पक्का है।

नरेन्द्र। मैं अब भी कहता हूं।

श्रीरामकृष्ण। क्यों इन इतनी बातों पर तु ने ध्यान दिया ?

नरेन्द्र। दोष कुछ ही है, परन्तु गुण उसमें बहुत से हैं।

श्रीरामकृष्ण। निष्ठा तो है।

"उस ने मुझ से कहा—अभी तो मैं तुम्हें नहीं सुहाता, परन्तु पीछे से फिर मुझे खोजना होगा। श्रीरामपुर से अद्वैतवंश का एक गोस्वामी आया हुआ था। दक्षिणेश्वर में दो एक रात रहने की इच्छा थी। मैंने उसकी खातिर की और उससे रहने के लिये कहा। हाजरा ने कहा, इसे खजांची के पास भेजो। उससे इस तरह कहने का मतलब यह था कि कहीं उस गोस्वामी ने पूछ मांगा तो हाजरा के हिस्से से न देना हो! मैंने कहा—'हं—रे साला, उसे गोस्वामी समझ कर मैं तो लम्बी दण्डवत करता हूं और तू संसार में रह कर, कामिनी और कांचन लेकर तरह तरह के गुल खिला कर, अब कुछ जप करके इतना अहंकार कर रहा है ?—तुझे लज्जा नहीं आती !

"सत्त्वगुण से ईश्वर मिलते हैं, रजोगुण और तमोगुण ईश्वर से अलग कर देते हैं। सत्त्वगुण की उपमा सफेद रंग से दी गई है, रजोगुण की लाल और तमोगुणकी काले से। मैंने एक दिन हाजरा से पूछा—'तुम कहो, किसमें कितना सत्त्वगुण हुआ है। उस ने कहा, 'नरेन्द्र को सोलह आना और मुझे एक रुपया दो आना।' मैंने अपने लिये पूछा, मुझ में कितना है ? उसने कहा, तुम्हारी तो ललाई अभी छट रही है,—तुम्हारे बारह आना है। (सब हंसे)।

"दक्षिणेश्वर में बैठ कर हाजरा जप करता था और उसी के भीतर से दालाली की भी कोशिश करता था। घर में कुछ हजार रुपया कर्ज था—उस कर्ज के अदा करने की फिक्र में था। भोजन पकाने वाले ब्राह्मणों के सम्बन्ध में उस ने कहा था, इस तरह के आदमियों से क्या हम कभी बातचीत करते हैं !

"बात यह है कि जरा सी कामना के रहते हुए ईश्वर को कोई पा नहीं सकता। धर्म की गति सूक्ष्म है। सुई के छेद में सूत डाल रहे हो, परन्तु, अगर जरा भी सूत उकसा हुआ हो तो छेद के भीतर नहीं जा सकता।

"तीस साल तक लोग माला फेरते रहते हैं, फिर भी कुछ नहीं होता—क्यों ?

घाव होने पर कंडे की आग से सेंका जाता है। नहीं तो केवल दवासे आराम नहीं होता।

"कामना के रहते चाहे जितनी साधना करो सिद्धि नहीं मिल सकती। परन्तु एक बात है, ईश्वर की कृपा होनेपर उनकी दया होनेपर क्षणभर में सिद्धि मिलती है। जैसे हजार साल का अन्धकार घर, एकाएक अगर कोई दिया ले जाता है तो क्षणभर में प्रकाशित हो जाता है।

"जैसे गरीब का लड़का बड़े आदमी की नजर में पड़ गया हो। उसके साथ उसने अपनी लड़की का विवाह कर दिया। एक साथ ही गाड़ी-घोड़े, दास-दासी, माल-असबाब, घर-द्वार, सब कुछ हो गया।"

एक भक्त। महाशय, कृपा किस तरह होती है ?

श्रीरामकृष्ण। ईश्वर बालस्वभाव है, जैसे कोई लड़का खोंछ में रत्न भरे बैठा हो। कितने ही आदमी रास्ते से चले जा रहे हैं। उससे बहुतेरे रत्न मांग रहे हैं, परन्तु वह कपड़े में हाथ चापकर कहता है, नहीं मैं न दूंगा। उधर किसीने नहीं चाहा, चला आ रहा है, उसके पीछे-पीछे दौड़कर उसकी खुशामद करके उसे दे दिया।

"त्यागके बिना ईश्वर नहीं मिलते।"

"मेरी बात कौन लेता है ? मैं आदमी खोज रहा हूं,—अपने भाव का आदमी। जिसे खूब भक्त देखता हूं, उसके लिये सोचता हूं यह शायद मेरा भाव ले सकेगा। फिर देखता हूं, वह एक दूसरे ढंग का हो जाता है।

एक भूत अपना साथी खोज रहा था। शनिवार या मंगल को अपघात मृत्यु के होने पर भूत होता है। भूत जब कभी देखता था कि शनिवार या मंगल को उसी तरह किसीकी मृत्यु होनेवाली है, तब उसके पास दौड़ जाता था। सोचता था, अब मुझे एक साथी मिला। परन्तु वह उसके पास गया नहीं कि वह आदमी उठकर बैठ जाता था। छत से गिरकर कोई बेहोश हुआ भी इसी तरह जी उठता था।

मथुर बाबू को भावावेश हुआ। वे सदा मतवाले की तरह रहते थे—कोई काम न कर सकते थे। तब सब लोग कहने लगे, इस तरह रहोगे तो जायदाद कौन सँभालेगा ? छोटे भट्टाचार्य ने (श्रीरामकृष्ण) ही कोई यंत्र-मंत्र किया होगा।

नरेन्द्र जब पहले पहल आया था, तब इसकी छाती पर हाथ

रखते ही वह बेहोश हो गया। फिर होश में आकर रोते हुए कहने लगा—'अजी, मुझे तुमने ऐसा क्यों कर दिया ?—मेरे बाबूजी हैं—मेरी मां जो है!' 'मेरा-मेरा' करना, यह अज्ञान से होता है।

"गुरु ने शिष्य से कहा, संसार मिथ्या है, तू मेरे साथ निकल चल। शिष्य ने कहा, महाराज ये सब मुझे इतना चाहते हैं—मेरे बाबूजी, मेरी मां, मेरी स्त्री—इन्हें छोड़कर मैं कैसे जाऊं ? गुरु ने कहा, तू 'मेरा-मेरा' करता तो है, और कहता है कि ये सब प्यार करते हैं, परन्तु यह सब भूल है। मैं तुझे एक उपाय बतलाता हूं, उसे करके देख, तो तू समझ जायगा, ये लोग तुझे सचमुच प्यार करते हैं या इसमें दिखलाता है। यह कहकर एक दवा उन्होंने उसके हाथ में दी और कहा, इसे खा लेना, खानेपर तू मुर्दे की तरह हो जायगा। तेरा ज्ञान नष्ट न होगा, तू सब देख-सुन सकेगा। फिर मेरे जानेपर क्रमशः तेरी पहले की ही अवस्था हो जायगी।

"शिष्य ने ठीक वैसा ही किया। घर में सब रोने लगे। उसकी माता, उसकी स्त्री, सब के सब उल्टी पछाड़े खाने लगीं। इसी समय एक ब्राह्मण ने आकर पूछा, यहां क्या हुआ है ? उन लोगों ने कहा, महाराज, इस लड़के को राम ले गये। ब्राह्मण ने उस मुर्दे का हाथ देखकर कहा, यह क्या—यह तो मरा ही नहीं। मैं एक दवा देता हूं, उसके खाने से यह अभी चंगा हो जायगा। उस समय डूबते हुए जैसे सहारा मिल जाय,—घरवाले इतने प्रसन्न हुए। तब ब्राह्मण ने कहा, परन्तु एक बात है, पहले एक दूसरे आदमी को दवा खानी पड़ेगी, फिर इसे। परन्तु पहले जो दवा खायंगे, उनकी मृत्यु अनिवार्य है। इसके तो अपने आदमी बहुत हैं, कोई न कोई दवा अवश्य ही खा लेगा। इसकी मां और इसकी स्त्री बहुत रो रही हैं, ये लोग तो अनायास ही दवा खा ले सकेंगी।

"तब वे सब की सब रोना-धोना बन्द कर के चुप हो रहीं। माता

ने कहा, ऐं, यह इतना बड़ा परिवार, मैं अगर मर गई तो इन सब की देख-रेख के लिये कौन रहेगा ?—यह कहकर वे सोचने-विचारने लगीं। उसकी स्त्री कुछ देर पहले रो रही थी—'अरी मेरी दीदी, मुझे यह क्या हो गया—री—' उसने कहा, अरे उन्हें जो होना था, सो तो हो चुका, मेरे दो तीन नाबालिग लड़के-बच्चे हैं, मैं अगर मर गई तो फिर इन्हें कौन देखेगा ?

"शिष्य सब देख-सुन रहा था। वह उठकर खड़ा हो गया और कहा, गुरुजी, चलिये, आप के साथ चलता हूं। (सब हंसते हैं)।

"एक शिष्य और था। उसने अपने गुरु से कहा था, मेरी स्त्री मेरी बड़ी सेवा करती है, गुरुजी, मैं उसीके लिये संसार नहीं छोड़ सकता, वह शिष्य हठयोग करता था। गुरुने उसे भी एक उपाय बतलाया। एकाएक उसके घर में खूब रोना-धोना मच गया। पड़ोस-वालों ने आकर देखा, घर में आसन लगाकर हठयोगी बैठा हुआ था,—देह के पुर्जे-पुर्जे टेढ़े हो गये थे। सबने समझा, उसके प्राण निकल गये हैं। स्त्री पछाड़े खा रही थी—'अरे, मेरे भाग्य में क्या यही लिखा था रे—हम अनाथों को छोड़कर तुम कहां चले गये—राम—अरी मेरी दीदी री—ऐसा होगा यह मैं नहीं जानती थी री—' इधर उसके आत्मीय और मित्र खाट ले आये। उसे घर से निकालने लगे।

"इस समय एक अड़चन हुई। सब देह टेढ़ी हो जाने के कारण, लाश कोठरीके द्वार से निकलती न थी। तब एक पड़ोसी दौड़कर कटारी लेकर चौखट काटने लगा। स्त्री अधीर होकर रो रही थी। वह काटने की आवाज सुनकर दौड़ी हुई आई। रोते हुए उसने पूछा—'यह क्या करते हो—दा—दा—' उन लोगों ने कहा, ये नहीं निकलते इसलिये चौखट काट रहा हूं। तब स्त्रीने कहा—'अरे मेरे दादा—ऐसा काम न करो, मैं तो 'रांड़' अब हो ही गई हूं! मेरे

घर का संभालनेवाला तो अब कोई रहा ही नहीं, कुछ नाबालिग बच्चे हैं, उन्हें पालकर आदमी बनाना है! यह दरवाजा चला जायगा तो दूसरा होने का है ही नहीं, उन्हें जो होना था, सो तो हो ही चुका—उन्हीं के हाथ-पैर काट दो।' तब हठयोगी उठकर खड़ा हो गया। यब दवा का असर जाता रहा था। खड़ा होकर उसने कहा—"क्यों री साली, हाथ-पैर कटाती है ? यह कहकर घर छोड़ गुरु के पास चला गया। (सब हंसते हैं)।

"बड़ा ढोंग करके स्त्रियां रोती हैं। रोने की खबर मिलती है, तो पहले नथ खोल डालती है, फिर और और गहने। खोलकर सन्दूक के अन्दर ताला मारकर रख देती हैं। फिर पछाड़ खा खाकर रोती हैं—अरी दीदी—मेरा यह क्या हुआ री—"

(२)

नरेन्द्र। Proof (प्रमाण) के बिना कैसे विश्वास करूं कि ईश्वर आदमी होकर आते हैं ?

गिरीश। विश्वास ही Sufficient Proof (यथेष्ट प्रमाण) है। यह वस्तु यहां है, इसका क्या प्रमाण है ? विश्वास ही इसका प्रमाण है ?

एक भक्त। External world (बहिर्जगत) बाहर है, इस बात को क्या कोई Philospher (दार्शनिक) Prove (प्रमाणित) कर सका है ? केवल कहा है—Irresistible belief (अनिवार्य विश्वास)

गिरीश (नरेन्द्र से)। तुम्हारे सामने आने पर भी तो विश्वास नहीं करोगे। संभव है, यह कहो कि वह कहता है, मैं ईश्वर हूं, मनुष्य के शरीर में आया हुआ हूं, वह झूठ बक रहा है—धोखा दे रहा है।

देवता अमर हैं, यह बात चली।

नरेन्द्र। इसका प्रमाण कहां है ?

गिरीश। तुम्हारे सामने आने पर भी विश्वास तो करोगे ही नहीं!

नरेन्द्र। अमर अतीत कालमें थे, इसका प्रमाण भी तो चाहिये

मणि पल्टू से कुछ कह रहे हैं।

पल्टू (नरेन्द्र से, हंस कर)। अनादि की क्या जरूरत है। अमर होना है तो अनन्त होना चाहिये।

श्रीरामकृष्ण (सहास्य)। नरेन्द्र वकीलका लड़का है, पल्टू डिप्टीका लड़का है। (सब हंसते हैं।)

सब कुछ देर चुप हो रहे।

योगीन्द्र। गिरीश आदि भक्तोंसे. (सहास्य) नरेन्द्र की बातों पर ये (श्रीरामकृष्ण) अब नहीं आते।

श्रीरामकृष्ण (हंस कर) मैंने एक दिन कहा था, चातक आकाश के पानी के सिवा और पानी नहीं पीता। नरेन्द्रने कहा, चातक यह पानी भी पीता है। तब मैंने मांसे कहा; मां, ये सब बातें क्या झूठ हो गईं! मुझे बड़ी चिन्ता थी। एक दिन नरेन्द्र आया। कमरे के भीतर कुछ चिड़ियां उड़ रही थीं। देख कर उसने कहा, यही है—यही है! मैंने पूछा क्या? उसने कहा, यही चातक है। मैंने देखा, कुछ चमगादड़ उड़ रहे थे! तभी से मैं उसकी बातोंको ग्रहण नहीं करता। (सब हंसते हैं)।

"यदुमल्लिक के बगीचे में नरेन्द्र ने कहा, तुम ईश्वरके रूप जितने देखते हो, सब तुम्हारे मनका भ्रम है। तब आश्चर्य में आकर मैंने उससे कहा, क्यों रे, वे बोलते जो हैं। नरेन्द्रने कहा, यह ऐसा हुआ करता है। तब मांके पास आकर मैं रोने लगा। कहा, 'मां', यह क्या हुआ?—क्या सब झूठ है? नरेन्द्र ऐसी बातें कहता है।' तब मांने दिखलाया, चैतन्य—अखण्ड चैतन्य—चैतन्यमय रूप। और उन्होंने कहा—'अगर ये बातें झूठ होंगी, तो ये सब मिलती किस

तरह हैं?' तब मैंने नरेन्द्र से कहा—साला, तूने अविश्वास पैदा कर दिया था—तू साला अब यहां मत आना।"

फिर विचार होने लगा। नरेन्द्र विचार कर रहे हैं। नरेन्द्र की उम्र इस समय बाईस वर्ष चार मास की है।

नरेन्द्र (गिरीश, मास्टर आदि से)। शास्त्रों पर भी कैसे विश्वास करूं? महानिर्वाण तंत्र एक बार तो कहता है, ब्रह्मज्ञानके बिना नरक होगा। फिर कहता है, पार्वतीकी उपासना को छोड़ और उपाय नहीं है। मनुसंहितामें मनु जो कुछ लिखते हैं—वे उन्हींकी अपनी बातें हैं। Moses (मोसेस) लिखते हैं Pentatuteh (पेन्टाट्यूच),—उसमें भी उन्होंने अपनी ही मृत्यु की वर्णना लिखी है।

"सांख्यदर्शन लिखते हैं, 'ईश्वरासिद्धेः', ईश्वर हैं, यह कोई प्रमाणित नहीं कर सकता। फिर कहते हैं, वेद मानना चाहिये, वेद नित्य हैं।

"इससे मैं यह नहीं कह रहा कि ये सब नहीं हैं। मैं समझ नहीं सकता, मुझे समझा दो! शास्त्रोंका अर्थ जिस के जी में जैसा आया, उसने वैसा ही किया है। अब मैं किस किसका ग्रहण करूं? White light (सफेद रोशनी) red medium (लाल शीशे) के भीतर से आती है तो लाल देख पड़ती है और green medium (हरे शीशे) के भीतर से आती है तो हरी देख पड़ती है।"

एक भक्त। गीता भगवान की उक्ति है।

श्रीरामकृष्ण। गीता सब शास्त्रों का सार है। संन्यासीके पास और चाहे कुछ न रहे, परन्तु एक छोटी सी गीता जरूर रहेगी।

एक भक्त। गीता श्रीकृष्णकी उक्ति है।

नरेन्द्र। श्रीकृष्ण की उक्ति है या, क्या नाम है, उनकी उक्ति है!—

श्रीरामकृष्ण। निर्वाक रह कर नरेन्द्र की ये सब बातें सुन रहे हैं।

श्रीरामकृष्ण। ये सब अच्छी बातें हो रही हैं।

"शास्त्रों के दो अर्थ हैं, एक शब्दार्थ और दूसरा मर्मार्थ। ग्रहण मर्मार्थ का ही करना चाहिये। जो अर्थ ईश्वर की वाणी के साथ मिलता हो। चिठ्ठीकी बातों से, जिसने चिठ्ठी लिखी है, उसकी बातों में बड़ा अन्तर है। शास्त्र हैं—चिठ्ठी की बातें। ईश्वरकी वाणी है उस की मुखकी बातें। मैं उस बातका ग्रहण नहीं करता जो माताकी बात से नहीं मिलती।

अवतारकी बात होने लगी।

नरेन्द्र। ईश्वर पर विश्वास होने से ही होगा। फिर वे कहां झूल रहे हैं, या क्या कर रहे हैं, इससे हमें क्या काम? ब्रह्माण्ड अनन्त है और अवतार भी अनन्त हैं।

नरेन्द्रकी यह बात सुन कर श्रीरामकृष्णने हाथ जोड़ उन्हें नमस्कार करके कहा—'अहा!'

मणि भवनाथसे कुछ कह रहे हैं।

भवनाथ। ये कहते हैं, हाथीको जब कि हमने नहीं देखा तो वह सुईके छेदके अन्दरसे जा सकता है या नहीं, यह हमें कैसे विश्वास हो? ईश्वरको हम जानते नहीं, फिर वे आदमीके रूपमें अवतार ले सकते हैं या नहीं, किस तरह हम इसका विचार करके समझें?

श्रीरामकृष्ण। सब कुछ संभव है। वे जादु वाला देते हैं। बाजीगर गलेमें छुरी मार लेता है, उसे फिर निकाल लेता है। कांकड़-पत्थर खा जाता है।

परिव्राजक।

(स्वामी विवेकानन्द)

(गतांक से आगे)

यही भूमध्य सागर के प्रान्त हैं,—जो यूरोपीय सभ्यता आजकल विस्तारित हो रही है, बाबिलो, फिनिक, यहूदी आदि सेमिटिक जातियों और ईरानी, यवन, रोमक आदि आर्य जातिके संमिश्रणसे वर्तमान यूरोपी सभ्यता हुई है।

"रोजेट्टा स्टोन" नामक एक खण्ड वृहत् शिलालेख मिश्रमें मिला। उस पर जीव जन्तुओं की पूंछ आदि के तौर पर चित्रलिपि से लिखा हुआ एक लेख है। उसके नीचे और एक प्रकार का लेख है, सब के नीचे ग्रीक भाषानुयायी लेख है। एक पंडित ने उस तीन लेखों को एक समझा था। कफ्त नाम की जो क्रिस्तान जाति अब भी मिश्र में मौजूद है और जो लोग प्राचीन मिश्रियों के वंशधर के नाम से मौजूद हैं। उन्होंने उन्हीं लेखोंके सहाय लेकर उस प्राचीन मिश्री लिपि का उद्घाटन किया। उसी तरह बाबिलोंकी ईंटें और टालियों पर लिखी भल्लाग्रवत् लिपि का भी क्रमशः उद्धार हुआ। इधर, भारतवर्ष में हलाकृति कुछ लेख महाराजा अशोक की समसामयिक लिपि के नाम से आविष्कृत हुए। इस से अधिक प्राचीन लिपि भारतवर्ष में नहीं मिली। मिश्र भर में अनेक प्रकार के मन्दिर, स्तम्भ शवाधार आदि पर जिस तरह कीर्तियां लिखी हुई थीं, क्रमशः वे सब पढ़ी गईं और, क्रमशः उन से मिश्रका तत्त्व विशद होगया है।

मिश्री लोगों ने समुद्र पार के "पन्ट" नामक दक्षिण देश से मिश्र में प्रवेश किया था। कोई कोई कहते हैं कि यह पन्ट ही वर्तमान

मालाबार है, और मिश्री और द्रविड़ एक ही जाति हैं। इन के प्रथम राजा का नाम है "मेनुस"। इन का प्राचीन धर्म भी किसी किसी अंश में हमारी पौराणिक कथाओं की तरह है। "शिबू" देवता "नुई" देवी के द्वारा आच्छादित थे, बाद को एक दूसरे देवता "शू" ने आकर बलपूर्वक "नुई" को उठा लिया। "नुई" का शरीर आकाश हुआ, दोनों हाथ और दोनों पैर हुए आकाश के चारों स्तम्भ। और "शिबु" हुए पृथ्वी। "नुई" के पुत्र-कन्या "असिरिस" और "इसिस" मिश्र के प्रधान देव-देवी हैं, और उनके पुत्र "होरस" सर्वोपास्य। इन तीनों की एक ही साथ उपासना होती थी। "इसिस" गोमाता के रूप से भी पूजित होती हैं।

पृथ्वी के "नील" नद की तरह आकाश में भी इसी प्रकार का नीलनद है—पृथ्वीका नीलनद उसका अंश विशेष है। इन के मत से सूर्य देव नाव पर चढ़कर पृथ्वी की प्रदक्षिणा करते हैं, कभी कभी अहि नामक सर्प उन्हें ग्रास करता है, तब ग्रहण पड़ता है।

चन्द्रदेव को एक शूकर कभी कभी आक्रमण करता है और खण्ड खण्ड कर डालता है, बाद पन्द्रह दिन उन्हें अच्छे होने में लग जाते हैं। मिश्रके सब देवता, कोई "शृगाल मुख" कोई "बाज-मुख युक्त" कोई "गोमुख" इत्यादि से हैं।

साथ ही साथ यूफ्रेटिस के तट पर एक दूसरी सभ्यता का उत्थान हुआ था। उन के भीतर "बाल", "मोलख". "ईस्तारत", और "दमूभी" प्रधान हैं। "ईस्तारत", "दमुजी" नामक एक मेष पालक के प्रणयपाश से बद्ध हो गये। एक बराह ने दमूजी को मार डाला। पृथ्वी के नीचे, परलोक में, ईस्तारत दमूजी को खोजने गईं। वहां "अल्लात्" नाम की ऐक भयङ्करी देवी ने उन्हें बड़ा कष्ट दिया। अन्तमें ईस्तारत ने कहा कि मुझे अगर दमूजी न मिलेंगे तो मैं मर्त्यलोक फिर न जाऊंगी। बड़ी मुश्किल हुई—वे थीं कामदेवी, उनके बिना

आये आदमी, जन्तु, पेड़ पौध फिर पैदा नहीं हो सकते। तब देवताओं ने यह सिद्धान्त ठहराया कि हर साल दमूजी चार महीने रहेंगे परलोक में यानी पातालमें, और आठ महीने रहेंगे मर्त्यलोक में। तब ईस्तारत लौट आई—बसन्त आया, शस्यादि पैदा होने लगे।

पुन यही "दमूजी", "आदुनोई" या "आदुनिस" के नाम से प्रसिद्ध हैं। कुछ सेमिटिक जातियों का धर्म किञ्चित अवान्तर भेद से प्रायः एक ही तरह का था। बाबिली, यहूदी, फिनिक और बाद के अरबों की एक ही तरह की उपासना थी। प्रायः सभी देवताओंका नाम मोलख (जिस शब्द के रूप बंगला भाषा में मालिक, "मुल्लुक" आदि अब भी हैं) अथवा "बाल" हैं; केवल अवान्तर भेद था किसी किसी का मत है—ये "अल्लात्" देवता बाद को अरबों के "अल्लाह" हुए।

इन सब देवताओं की पूजा के भीतर कुछ भयानक और जघन्य कार्य भी थे। "मोलख" या "बाल" के पास पुत्र-कन्या को जीते ही जला देते थे। "ईस्तारत्" के मन्दिर में स्वाभाविक और अस्वाभाविक कामसेवा प्रधान अंग थी।

यहूदी जाति का इतिहास बाबिलों के बनिस्बत बहुत आधुनिक है। पण्डितोंके मत से बाइबिल नामक धर्मग्रन्थ क्राइस्ट से पहले ५०० शताब्दि से शुरू होकर क्राइस्ट के बाद तक लिखा गया था। बाइबिलके अनेक अंश जो पहले के कहकर प्रतिष्ठित किये गये हैं, बहुत बादके लिखे गये हैं। इस बाइबिलके भीतर की स्थूल कथायें बाबिल जातिकी हैं। बाबिलोंकी सृष्टि-वर्णन, जल-प्लावन वर्णन, आदि अधिकांशतः बाइबिल ग्रन्थ में संगृहीत हुई हैं। इस पर पारसी बादशाह लोग जब एशिया माइनर पर राज्य करते थे, उस समय बहुत कुछ पारसी मतोंका बाइबिल में प्रवेश हुआ है। बाइबिल के प्राचीन भाग के मत से यह संसार ही सब कुछ है। आत्मा या परलोक नहीं है। नये भाग मे पारसियोंका परलोक का भूतोंका

पुनरुत्थान आदि दृष्टिगोचर होता है। और शैतान-वाद तो बिलकुल ही पारसियोंका है।

यहूदी-धर्मका प्रधान अंग "याभे" नामक "मोलख" की पूजा है। यह नाम लेकिन यहूदी भाषा का नहीं। किसी किसी के मत से यह मिश्री शब्द है। लेकिन कहां से आया, यह कोई नहीं जानता। बाइबिल में वर्णन है कि यहूदी लोग बद्ध हो कर बहुत दिनों तक मिश्र में थे। यह सब इस समय कोई विशेष मानता नहीं और "इब्राहीम" "इसहाक" "यूसुफ" आदि गोत्रपिताओं रूपक हैं, यह साबित किया जाता है।

यहूदी लोग "याभे" नामका उच्चारण नहीं करते थे उसकी जगह "आदुनोई" कहते थे। जब यहूदी लोग इस्रेल और इफ्रेम दो शाखाओं में विभक्त हो गये, तब दोनों देशोंमें दो प्रधान मन्दिर तैयार हुए, जिसमें "याभे" देवताको एक नर-नारी संयुक्त मूर्ति एक सन्दूक के अन्दर रखी जाती थी। द्वार पर बड़ासा एक पुंचिन्ह स्तम्भ था। इफ्रेम में "याभे" देवता, सोनेसे मढ़े हुए वृषकी मूर्त्ति पर पूजित होते थे।

दोनों जगहों में, ज्येष्ठ पुत्रको देवताके पास जीते हुए ही अग्नि में आहुति देते थे और स्त्रियों का एक दल उन दोनों मन्दिरों में वास करता था। वे लोग मन्दिरके भीतर ही वेश्यावृत्ति करके जो कुछ पैदा करती थीं, सब मन्दिरके खर्च में लगाता था।

क्रमशः यहूदियों के भीतर एक दल का प्रादुर्भाव हुआ ; वे लोग गीत या नृत्य से अपने भीतर देवता का आवेश करते थे। इसका नाम नबी या (Prophet) था। इनमें बहुत से लोग ईरानियों के संसर्ग से मूर्तिपूजा, पुत्रबलि, वेश्यावृत्ति आदिके विपक्ष में हो गये। क्रमशः बलि की जगह हुई सुन्नति। वेश्यावृत्ति, मूर्ति आदि क्रमशः उठ गई। क्रमशः उस नबी सम्प्रदाय के भीतर से क्रिस्तान धर्मकी सृष्टि हुई।

ईशा नामके कोई पुरुष कभी पैदा हुए थे या नहीं, इस विषय पर भयानक वितण्डा हो चला। "न्यू टेस्टामेन्ट" की जो चार पुस्तकें हैं, उनमें सेन्ट जान नामक पुस्तक तो बिलकुल अप्रमाण हो गई है। बाकी तीन, कोई एक प्राचीन पुस्तक देख कर लिखी गई है, यह सिद्धान्त है ; वह भी ईशा हजरत का जो समय निर्दिष्ट हुआ है, उसके बहुत बाद।

उस पर, जिस समय ईशाके पैदा होनेकी प्रसिद्धि है, उस समय उन यहूदियोंके भीतर दो आदमी ऐतिहासिक पैदा हुए थे, "जोसिफुस" और "सिलो"। इन लोगोंने यहूदियोंके भीतर छोटे छोटे सम्प्रदायोंका भी उल्लेख किया है, लेकिन ईशा या क्रिस्तानों का नाम भी नहीं है, अथवा रोमन जज उन्हें क्रूशमें मारनेका हुक्म दिया था। इसकी कोई बात नहीं है। जोसिफुसकी पुस्तकमें कुछ लाईन थीं, वह भी अब प्रक्षिप्त प्रमाणित हुई हैं।

रोमक लोग उस समय यहूदियों पर राज्य करते थे। सब विद्याएँ ग्रीक लोग सिखलाते थे। इन सभी लोगोंने यहूदियोंके सम्बन्धमें बहुतसी बातें लिखी हैं, परन्तु ईशा या क्रिस्तानोंकी कोई बात नहीं लिखी।

फिर मुश्किल यह है कि जो सब कथाओं, उपदेशों या मतों का न्यू टेस्टामेन्ट ग्रन्थ में प्रचार आया है, वे सभी नाना दिग देशों से आकर, खृष्टाब्दके पहले ही यहूदियों में मौजूद थे और "हिलेल" आदि रब्बीगण (उपदेशक) प्रचार कर रहे थे। पण्डित लोग तो यही सब कह रहे हैं, लेकिन दूसरे के धर्म के बारे में जिस तरह तुरंत कोई बात कह डालते हैं, अपने देश के धर्म के बारे में यह कहने पर क्या फिर गौरव भी रहता है। अतएव शनैः शनैः चल रहे हैं। इसका नाम है "हाईअर क्रिटिसिज्म"।

पाश्चात्य बुधमंडली, इस प्रकार, देश देशान्तर के धर्म, नीति,

जाति इत्यादि की आलोचना कर रही है। हमारी बङ्गला भाषा में कुछ भी नहीं। होगा भी किस तरह—एक बेचारा दस बारह वर्ष लिगातार मिहनत करके यदि इस तरह की एक किताबका अनुवाद करे तो वह खुद क्या खाय और किताब छपाये क्या देकर?

एक तो देश अत्यन्त दरिद्र है, उनमें विद्या एकदम नहीं कहना ही ठीक है। ऐसा दिन कब होगा कि हमलोग नाना प्रकारकी विद्या की चर्चा करेंगे? —"मूकं करोति वाचालं, पंगुं लंघयते गिरिम्—यत् कृपा!"—माता जगदम्बा ही जाने।

जहाज नेपलस में लगा—हमलोग इटली में पहुंचे। इसी इटली की राजधानी रोम है। यह रोम, उसी प्राचीन महावीर्य रोम साम्राज्य की राजधानी है—जिसकी राजनीति, युद्ध विद्या, उपनिवेश संस्थापन, परदेश-विजय, अब भी सम्पूर्ण पृथ्वी का आदर्श है! नेपलस छोड़कर जहाज मार्सेई लगा था, फिर सीधे लंडन।

योरप के बारे में तो तुम लोगों को सुनी हुई अनेक कथाएं हैं,—वे लोग क्या खाते हैं, पहनते हैं, क्या रीति-नीति-आचार इत्यादि है—यह अब मैं विशेष क्या कहूं। परन्तु यूरोपी सभ्यता क्या है, इसकी उत्पत्ति कहां पर है, हमलोगों के साथ इसका क्या संबंध है, इस सभ्यताका कितना अंश हमें लेना चाहिये—इन सब विषयों पर बहुत सी बातें कहनेको रहीं। शरीर किसीको छोड़ता नहीं भाईसाहब, अतएव दूसरे बार ये सब बातें कहूंगा। अथवा कहकर क्या होगा? बकबक और बोलने में हमलोगों की तरह (खास तौर से बंगालियों की तरह) मजबूत भी कौन है? अगर सको तो करके दिखाओ। कार्य वार्तालाप करे और मुंह को विदा दो। लेकिन एक बात कह रक्खूं,—गरीब नीची जातियों के भीतर विद्या और शक्ति का प्रवेश जब होने लगा, तभीसे योरप उठने लगा। अन्य देशों के कूड़े की तरह परित्यक्त हजारों दुखी-गरीब अमेरिका में स्थान पाते हैं,

आश्रय पाते हैं; यही अमेरिका के मेरुदण्ड हैं! बड़े आदमी, पण्डित, धनी, इन लोगों ने सुना या नहीं सुना, समझा या नहीं समझा, तुम लोग को गालियां दीं या तारीफ की, इससे कुछ भी नहीं आता जाता। ये लोग हैं सिर्फ शोभा, देश के बहार!—करोड़ों की संख्या में जो लोग नीच और गरीब हैं, वही लोग प्राण हैं। संख्या से कुछ आता जाता नहीं, धन या दारिद्र से कुछ आता जाता नहीं, मनसा-वाचा-कर्मणा यदि ऐक्य हो तो मुट्ठी भर लोग दुनिया उलट दे सकते हैं—यह विश्वास न भूलना। बाधा जितनी ही होगी उतना ही अच्छा है। बाधा बिना पाये क्या कभी नदी का वेग बढ़ता है? जो वस्तु जितनी नई होगी, जितनी अच्छी होगी, वह वस्तु पहले-पहले उतनी ही बाधा पायेगी। बाधा ही तो सिद्धि की पूर्व लक्षण है। जहां बाधा नहीं वहां सिद्धि भी नहीं है। अलमिति।

* * * *

हमारे देश में कहते हैं, पैर में चक्र रहा तो वह मनुष्य आवारा गर्द होता है। मेरे पैर में शायद अब चक्र ही चक्र है। शायद इसलिये कहता हूं, चक्रका आविष्कार करनेकी बड़ी चेष्टा की, परन्तु वह चेष्टा बिलकुल विफल गई—मारे जाड़ेके पैर फट गये थे—जगह जगह बिवाईसी गई थीं, उससे चक्र-वक्र कुछ भी न दिखलाई पड़े। खैर, जब कि, किम्वदन्ती है, तब मान लिया कि मेरा पैर चक्रमय है। फल तो प्रत्यक्ष है—इतना सोचा कि पेरिस में बैठकर कुछ दिन फ्रेंच भाषा, सभ्यता आदिकी आलोचना करूँगा; पुराने दोस्त-मित्रोंको छोड़ कर एक गरीब फरासीसी नवीन मित्रके यहां जाकर ठहरा (वे नहीं जानते अंग्रेजी और मेरी फरासीसी—वह एक विचित्र तमाशा!) इच्छा थी कि गूंगेकी तरह बैठे रहने की असमर्थतासे मजबूरन, फ्रेंच बोलनेका उद्योग होगा और अनर्गल फ्रेंच भाषा निकलती रहेगी—और कहां चला वियेना, तुर्की, ग्रीस, ईजिप्ट

जेरूसलेम पर्यटन करने, भवितव्य का कौन लङ्घन करे, कहां। तुम्हें पत्र लिख रहा हूं मुसलमानी प्रभुत्वकी अवशिष्ट राजधानी कानस्टान्टिनोपल से।

साथ में तीन साथी हैं—दो हैं फ्रान्सीसी और एक अमेरिकन। अमेरिकन है, तुम लोगों की परिचिता मिस मेकलौड, फरासी पुरुष मित्र मोसिये जुलबोवा, फ्रान्स के एक सुप्रतिष्ठित दार्शनिक और साहित्य लेखक; और फरासीसनी सखी, जगद्विख्यात गायिका माद-मौवाजेल कालभे। फरासी भाषा में "मिस्टर" होते हैं "मोसिये" और "मिस" होती हैं "मादमोवाजेल" 'ज' का उच्चारण पूर्व-बङ्गाल के 'ज' की तरह। मादजेवाभेल काल मे आधुनिक काल की सर्वश्रेष्ठा गायिका —अपेरा गायिका हैं। इनके गीतों का इतना समादर है कि इन्हें सालाना तीन चार लाख की आमदनी है, केवल गीत गाकर। इनसे हमारा परिचय पहले से ही है। पाश्चात्य देशों की सर्वश्रेष्ठा अभिनेत्री मादामसारा बर्नहार्ड, और सर्वश्रेष्ठा गायिका काल भे, दोनों ही फ्रान्सीसी हैं, दोनों ही अंगरेजी भाषा से सम्पूर्ण अनभिज्ञा हैं। लेकिन इङ्गलेंड और अमेरिका कभी-कभी जाती हैं और अभिनय कर तथा गीत गाकर लाखों डालर संग्रह करती हैं। फरासीसी भाषा सभ्यता की भाषा है, पश्चिमी संसार के भद्र पुरुषों का चिन्ह, सभी लोग जानते हैं, इसलिये इनके न अंगरेजी सीखने का अवकाश है और न प्रवृत्ति ही। मादाम बार्नहार्ड वर्षीय सी हैं, परन्तु जब सज कर मञ्च पर खड़ी होती हैं तब जिस उम्र और लिङ्ग का अभिनय करती हैं, उसकी हूबहू नकल! बालिका, बालक, जो कहो वही,—हूबहू— और ऐसी ताअज्जुब की आवाज! ये लोग कहते हैं, उसके कण्ठ में रुपहले तार बजते हैं! बार्नहार्ड का अनुराग विशेष रूप से भारतवर्ष के ऊपर है, मुझ से बारम्बार कहती हैं, तुम लोगों का देश "मेंजासिएन, मेस-विलिजो"—बहुत ही प्राचीन, बहुत ही सभ्य है। एक वर्ष भारत-

वर्ष सम्बन्धी एक नाटक खेला, उस में मञ्च के ऊपर बिलकुल एक भारतवर्ष का रास्ता खड़ा कर दिया था—लड़के, बच्चे, पुरुष, साधु, नागा, बिलकुल भारतवर्ष! मुझ से अभिनय के बाद कहा कि "आज महीने भर से हरएक म्यूजियम घूम कर भारतवर्ष के पुरुष, स्त्रियां, पोशाक, रास्ता, घाट आदि पहचाना है।" बार्नहार्ड की भारत देखने की बड़ी ही प्रबल इच्छा है—"से मं रेम्"—"से म रेंम"—वह मेरा जीवन स्वप्न है। फिर प्रिन्स आफ वेल्स उन्हें बाघ, हाथी शिकार करावेंगे, प्रतिज्ञा कर चुके हैं। परन्तु बार्नहार्ड ने कहा—उस देश में जाया-जाय तो डेढ़ दो लाख रुपये भी न खर्च किये गये तो क्या? रुपये का टोटा उन्हें नहीं है—"ला दिविन सारा") La Divine sara)—दैवी सारा"—उन्हें रुपये का क्या अभाव है? —जिनका आना जाना बिना स्पेशल ट्रेन के नहीं होता!—वह भरपूर विलास, योरप के कितने राजे-रजवाड़े नहीं अट सकते, जिनके थियेटर में महीने भर आगे के दूनी कीमत पर टिकिट खरीद रखने पर तब कहीं जगह होती है, उन्हें रुपये का बड़ा टोटा नहीं है, परन्तु सारा बार्नहार्ड निहायत खर्चीली हैं। उनका भारतभ्रमण इसीलिये अभी रह गया।

मद मोआजेल कालभे इस शीत में नहीं गायेंगी—इजिप्त आदि नातिशीत देशों को चली हैं—मैं जाता हूं, इनका अतिथि होकर। कालभे केवल संगीत की चर्चा नहीं करतीं; इन में यथेष्ट विद्या है, दर्शन-शास्त्र और धर्मशास्त्र का विशेष समादर करती हैं। निहायत दरिद्र अवस्था में जन्म हुआ, क्रमशः अपनी प्रतिभा के बल से, विशेष परिश्रम से, अनेक कष्ट सह कर अब प्रचुर धन पैदा कर लिया है! राजे-बादशाहों के सामान की ईश्वरी हैं।

—ooo—

आवश्यक भूमि ।

(लेखक, कौण्ट टालस्टाय । अनु०—)

(१)

एक नगर निवासिनी स्त्री अपनी छोटी बहन से मिलने के लिये देहात गयी । बड़ी बहन की शादी नगर में एक दुकानदार से हुई थी तथा छोटी गांवमें एक कृषकसे ब्याही गयी थी । जब वे चाय पी रही थीं तब बड़ी अपने नागरिक जीवन के विषय में सदर्प बातचीत करने लगी । अपनी जीवन-चर्या, गगन-चुम्बी भवन, सुन्दर वस्त्रों, सरस मधुर भोज्य तथा पेय (पीनेकी वस्तुओं) के विषयमें उसने लम्बा चौड़ा व्याख्यान दे डाला । नृत्यदृश्य, थियेटर तथा दूसरे खेल-तमाशों-का तो उसने मानों खाका सा खींच दिया ।

छोटी बहनके भावोंको चोट पहुंची । वह व्यापारियोंके जीवनको हेच निगाहसे उपेक्षा करती हुई अपने कृषक-जीवनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगी । उस ने कहा—मैं कभी भी क्षण भरके लिये भी इस कृषक-जीवनको तुम्हारे जीवन से बदल नहीं सकती । माना कि हम गरीबीसे जीवन व्यतीत करते हैं । किन्तु हमको किसी प्रकारका कोई भय तो नहीं । तुम हम लोगोंसे अच्छी तरहसे रहती हो, तुम्हें पर्याप्त धन प्राप्त होता है अथवा पर्याप्त खोना पड़ता है । आज तुम धनी हो किन्तु शायद कल गलियोंमें भिक्षा रटन करते दिखाई दोगे । हमारा कृषक जीवन अधिक विश्वसनीय है । यद्यपि हमारी वस्तुएं भड़कदार नहीं तथापि ठहराऊ हैं । हम कभी धनी हो पावेंगे तथापि हमारे पास आवश्यकताके लिये पर्याप्त रहेगा ।

बड़ी बहनने जोर देकर कहा—पर्याप्त ! हां ! शायद पर्याप्त रहेगा—मगर सुअर तथा बछड़ोंकी तरह ! किन्तु तुम्हें आराम नहीं,

कोई सोसायटी नहीं । तुम्हें व्यवहार वा वर्तावका ज्ञान नहीं ! तुम्हारा पति कितना ही परिश्रम करे तुम इसी दरिद्रतामें दिन काटोगी, इसी अवस्थामें मरोगी और तुम्हारे बाद तुम्हारे लड़कोंकी भी यही दशा होगी ।

छोटी बहन—इससे क्या ? यह हमारा जीवन है । किन्तु हम विपत्तियोंसे अधिकतर रक्षित हैं । हम किसीके सामने सर नीचा नहीं करते । हमें किसीका डर नहीं । नगरमें तुम विषय वासनाओंमें प्रवृत्ति करानेवाली वस्तुओंके बीच रहती हो । तुम आजकी वंशी बजाती हो कल कोई बासना आकर तुम्हारे पतिको जुआ, शराब या किसी औरतके ही लोभमें डाल सकती है और सत्यानाश कर सकती है । क्या यह सत्य नहीं ?

छोटीका पति पैखम वहीं चूल्हे पर सोया हुआ औरतोंका विवाद-सुन रहा था ।

उसने कहा—हां ! यह सत्य है और यह ईश्वरीय सत्य है । जबसे तुमने खेतोंमें काम करना प्रारम्भ किया और भूमिसे सब कुछ पैदा किया तबसे तुम्हारे मस्तिष्कमें कोई बुरा बिचार नहीं उठा । हमारी एक ही कठिनता है और वह यह है कि हमारे पास आव-श्यकताके अनुकूल भूमि नहीं है । यदि हमारे पास इच्छानुकूल भूमि होती तो हमें किसीका डर नहीं होता । औरोंकी क्या स्वयं शैतान का भी डर नहीं होता ।

स्त्रियोंने चाय पीना समाप्त किया । अपने पहिनावेके विषय में थोड़ी बात की, फिर वस्तुओंको यथा स्थान रख सोने चली गई ।

(२)

गांवके समीप एक महिला रहती थी, जिसकी तीन सौ बीघे भूमि काश्तकारोंके खेतोंके निकट ही थी । वह काश्तकारोंके साथ बहुत ही शान्तिपूर्वक रहती थी । उसने कभी किसीके सथा बुरा

बर्ताव नहीं किया। किन्तु एक दिन उसने एक बूढ़े सिपाही को अपना गुमाश्ता नियत किया। वृद्ध सिपाहीने कृषकोंको जुर्मानेसे तंग कर डाला। पैखम यथाशक्ति सावधान रहता, किन्तु सर्वदा जईके खेतमें उसका घोड़ा अथवा बगीचेमें भगी हुई गाय पाई जाती। कहीं उसके बछड़े भी चरागाहमें पहुंच जाते। प्रत्येक बार उसे अर्थदण्ड देना पड़ता।

पैखम अर्थदण्ड देता और घर पर ताड़ना तथा थप्पड़ पाने लगा। गर्मीके मौसिम में बहुधा वह सिपाही उसे फंसा कर टके सीधा करता। पैखम जाड़ेके आने पर जब जानवर घरोंमें रखे जाते हैं बहुत प्रसन्न होता। पुआल तथा घासके लिये तकलीफ़ तो होलनी पड़ती मगर वह घबड़ाता नहीं था।

जाड़ेमें यह खबर फैली कि वह स्त्री अपनी भूमि बेंच रही है और वहींका निवासी एक जमींदार उसे मोल लेना चाहता है। इस समाचारसे काश्तकार बहुत ही दुखी हुए।

उन्होंने सोचा—यह और ही बुरा हुआ। यदि जमींदार यह भूमि मोल लेता है तब तो वह जुर्माने ही में हम लोगोंका खून चूस लेगा। इस भूमि बिना हम लोगोंका रहना ही नहीं हो सकता। इस भूमिसे हम लोग चारों ओरसे घिरे हैं।

इसलिये गांवभरके वृद्ध पुरुष उस स्त्रीके पास पहुंचे। जमींदारके बदले उन्हींके हाथ भूमि बेचना उचित होगा यही उनका कथन था। इन लोगोंने जमींदारसे कुछ अधिक मूल्य देनेकी भी प्रतिज्ञा की। स्त्री सहमत हो गयी। कृषकोंने सम्मिलित होकर भूमि खरीद लेनेका प्रयत्न किया। उन्होंने कई सभाएं कीं किन्तु कुछ तय नहीं कर पाये। अन्तमें यह तय पाया कि प्रत्येक मनुष्य यथाशक्ति भूमि मोल ले ले। भूस्वामिनी भी इस पर सहमत हो गयी।

पैखमने सुना कि उसके एक पड़ोसीने साठ बीघे भूमि खरीदी

है और रमणी आधा रुपया दो वर्षमें किस्त द्वारा लेने पर सहमत हो गयी है। उसने ईर्ष्यामें पड़ कर सोचा कि वे सभी भूमि खरीद लेंगे और मुझे एक धूर भी नहीं मिलेगी। इसलिये उसने इस विषयमें अपनी स्त्रीके साथ परामर्श किया।

पैखमने कहा, सब लोग भूमि मोल ले रहे हैं। हम लोगोंको भी तीस बीघे ले लेना चाहिये। दूसरा कोई उपाय नहीं। वह जमींदार अर्थदण्ड द्वारा ही हमारा सत्यानाश कर डालेगा।

सब कुछ तय हो गया। उस के पास दस पौंड पहिले ही से मौजूद थे। कुछ बछेड़ियों तथा शहदके छत्तों को बेंच कर और कुछ अपने लड़केको एक आदमीके यहां नौकर नियत कर इकट्ठा किया। इस प्रकार मूल्यका अर्द्धांश इकट्ठा हो गया।

पैखमके हाथमें जब रुपया आ गया तब उसने पचास बीघे भूमि मोल ले लिया, जिसमें कुछ जंगल भी था। वह रमणीके पास गया। लिखा-पढ़ी कराकर आधा दाय उसी वक्त चुका दिया। बाकी आधेके लिये दो वर्षका समय लिया।

अब पैखम अपनी निजकी भूमि पर रहने लगा। बीज उधार लेकर सब खेतोंको बोया। फ़सल बहुत ही अच्छी हुई। उसी वर्ष उसने सारा ऋण चुका दिया। अब वह भू-स्वामी हो गया। अब वह अपनी ही भूमिमें खेती करता, उसके पशुओंके लिये चरागाह भी अपने थे, घास तथा लकड़ीके लिये वृक्ष भी अपने थे। जब वह खेतको जाता, अथवा नाजके पौदों और चरागाहों पर उसकी दृष्टि पड़ती, तब उसके आनन्दकी सीमा न रहती। घास तथा नाजके पौदे औरोंसे भिन्न जान पड़ते थे। पहिले यही खेत उसे साधारण दिखते थे किन्तु अब वे उसे असाधारण जान पड़ने लगे।

(३)

इस प्रकार पैखमका जीवन व्यतीत होने लगा। वह सर्वदा

आनन्दित रहता। सब अच्छा हुआ होता यदि कृषक केवल उसके खेतों तथा चरागाहोंमें अपने पशु न छोड़ देते। उसने अनेकों बार उनसे इसकी शिकायत की और उन्हें चितावनी भी दी किन्तु कृषकोंने ध्यान नहीं दिया।

कुछ समय तक वह गायों तथा घोड़ोंको धीरेसे हांक देता। किन्तु इससे काम चलता दिखाई नहीं दिया। वह थक गया। अन्तमें उसने न्यायालयकी शरण ली। वह जानता था कि कृषक जान-बूझ कर ऐसा नहीं करते, उनके पास बहुत थोड़ी भूमि है। किन्तु उसने सोचा—मैं सर्वदा चुप नहीं रह सकता। इसी प्रकारसे मेरी भूमिका नाश हो जायेगा। मुझे उन्हें अवश्य ही एक पाठ पढ़ा देना चाहिये।

इसलिये उसने उन्हें एक सबक सिखा दिया। बहुतसे कृषकों को जुर्माना हुआ। कृषकोंको क्रोध आया और अब वे जान-बूझ कर उसे तंग करने लगे।

रात्रिको किसीने उसके जंगलके दर्जनों पेड़ों को काट डाला। पैखम जब घूमते हुए जंगलकी ओर गया तो उसे मालूम हुआ कि एक स्थान पर वृक्षोंके मध्यसे प्रकाश आ रहा है। वह वहां तक गया और वृक्षोंको कटा पाया।

पैखम क्रोधान्ध हो गया—ओह! यदि मैं पौदोंके काटनेवालेको जान पाऊँ तो उसे पूरी शिक्षा दूं।

वह विचारने लगा कि यह किसका काम है। अन्तमें उसने निश्चय किया कि यह सिमनका काम है, दूसरेका नहीं। इसलिये वह सिमनके चौपालमें गया और व्यर्थ ही उसके साथ झगड़ पड़ा। इसके पश्चात् उसका विश्वास और भी दृढ़ हो गया। उसने न्यायालयकी शरण ली। एक दो इजलासों पर सिमन दोषी ठहराया गया, किन्तु अपीलमें निरपराध सिद्ध हुआ। उसके विरुद्ध प्रमाणोंकी नितान्त

कमी थी। पैखम अत्यन्त क्रोधान्ध हो गया और गांवके वृद्धजनों तथा न्यायाधीशोंसे झगड़ा कर बैठा।

पैखमने क्रोधमें कहा—तुम चोरोंकी रक्षा करते हो। यदि तुम ईमानदार होते तो उसे कभी नहीं छोड़ते।

इस प्रकार उसने जजों तथा पड़ोसियोंसे झगड़ा किया। इस पर उन लोगोंने उसके मकान तथा जंगलमें आग लगा देनेकी धमकी दी।

पैखमको खेतोंकी कमी न रही, किन्तु संसारमें उसके लिये जगहकी कमी हो गयी।

उस समय समाचार फैला कि लोग नये उपनिवेशोंमें बसनेके लिये जा रहे हैं। पैखमने विचार किया—मैं अपनी भूमि छोड़ने नहीं चाहता। यदि हमारे यहां के कुछ लोग चले जांय तो हमलोगोंके लिये अच्छा हो। मैं उनकी भूमि खरीद लूंगा। यहांकी बस्ती घनी होती जा रही है।

एक दिन पैखम घर पर बैठा था कि, एक कृषक यात्री आ पहुंचा। उसने उसे भोजन कराकर रातको वहीं ठहरनेको कहा। फिर उसने पूछा—"कहांसे आप आ रहे हैं?"

कृषकने उत्तर दिया—मैं दक्षिणसे आ रहा हूं। वोल्गा गांवमें मैं काम करता था। वहांकी भूमि बहुत ही उपजाऊ है। वहां पर अन्य प्रान्तोंसे लोग आकर बस रहे हैं। हमारे ही जन्मभूमिसे कितने लोग गये हैं। वे लोग वहांकी संस्थामें सम्मिलित कर लिये जाते हैं और प्रत्येक मनुष्यको तीस बीघे भूमि दी जाती है। भूमि बड़ी उपजाऊ और राई इतनी बढ़ती है कि खेतोंमें घोड़े छिप जांय, डंठल इतने मोटे होते हैं कि चार ही पांचमें एक मुट्ठा हो जाता है। एक किसान वहां खाली ही हाथ आया। उसके पास काम करनेको हाथोंके अतिरिक्त और कुछ न था, किन्तु आज उसके पास छः घोड़े तथा दो गायें हैं।

पैखमका हृदय उल्लासित हो उठा।

उसने सोचा—जब हम वहां अच्छी तरहसे रह सकते हैं तो इस घने बसे हुए स्थानमें व्यर्थ जीवन-युद्धमें क्यों जान दें? मैं अपना मकान तथा भूमि बेंच कर उसी रुपयेसे वहां कार्यारम्भ करूंगा। यहां मनुष्य विपत्तियोंमें फंसा रहता है। पहिले खुद जाकर ठीक ठीक पता लगाना चाहिये।

बसन्त ऋतुमें वह घरसे एक दिन निकल पड़ा। कुछ दूर स्टीमरसे गया फिर लगभग तीन सौ मिल पैदल चलकर निश्चित स्थानपर पहुंच गया। उसने प्रत्येक वस्तुको सुने हुए वर्णनके अनुसार ही पाया। कृषक आरामके साथ जीवन बिता रहे थे और प्रत्येकके पास संस्थाकी दी हुई तीस बीघे भूमि थी। संस्था प्रत्येक नये आनेवालेको स्वागत करती। यदि किसीके पास धन हो, तो वह संस्था प्रदत्त भूमिके अतिरिक्त, अपने निजी सम्पत्ति के तौर पर स्वेच्छानुसार भूमि मोल ले सकता था। सबसे उपजाऊ भूमिका मूल्य केवल २) रुपये प्रति बीघे था।

पैखम आवश्यक बातोंको जान कर घर लौटा। सब वस्तुओंको लाभके साथ बेंच कर, अपने परिवारके साथ नये स्थानके लिये रवाना हो गया।

(४)

अन्तमें वह नवीन स्थान पर आ पहुंचा। उसने अपना नाम एक बड़े ग्रामके संस्थामें लिखवाया। ग्रामके मानी लोगोंको भोज दिया। कागज-पत्र ठीक करा लिया और नियम पूर्वक वहांकी संस्था में सम्मिलित हो गया। उसके परिवारके पांच आदमियोंके लिये इस १५० बीघे भूमि मिली। उसने एक छप्परका मकान बनवाया और पशु मोल लिया। उसके पास पहिलेसे तिगुनी भूमि हो गई। भूमि भी पहिलेसे उपजाऊ थी। उसके पास पर्याप्त चरागाह थे और स्वेच्छानुसार ढोर रख सकता था।

पहिले तो वह जब वहां प्रबन्ध कर सिलसिला जमा रहा था और मकान बनवा रहा था, बहुत ही प्रसन्न था। किन्तु थोड़े दिनोंके पश्चात् उसे मालूम हुआ कि वहां भी बस्ती घनी होती जाती है। पहिले वर्ष गेहूंकी फसल बहुत ही अच्छी थी। दूसरे वर्ष वह अधिक गेहूं बोना चाहता था, किन्तु उसके पास पर्याप्त भूमि नहीं थी। जो भूमि थी वह भी गेहूं बोने योग्य न थी। वहां गेहूं या तो घास वाले खेतोंमें बोया जाता है या 'परिहरा' में (खेत जो वर्ष रोज़ बिना बोये जोते जाते है)। प्रत्येक दो वर्षोंके पश्चात् खेत परती छोड़ दिये जाते हैं कि उनमें घास आ जाये। गेहूंके खेतोंके लिये सभी इच्छुक होते हैं और ऐसी भूमि सबके लिये पर्याप्त नहीं है।

झगड़े भी उठ खड़े हुए। धनी किसान आप ही अपनी भूमि जोतते बोते थे, किन्तु निर्धन कृषकोंको अपनी भूमि व्यापारियोंको लगान पर दे देना पड़ता थी जो बदलेमें उनके टैक्स देते थे नहीं तो निर्धन कृषकोंको ऋण लेना पड़ता था।

पैखम गेहूं की और अधिक खेती किया चाहता था इसलिये उसने एक व्यापारीसे एक वर्षके वास्ते कुछ भूमि लगान पर लिया। गेहूं अच्छा हुआ किन्तु नगरमें जो दस मिलकी दूरीपर स्थिर था, गाड़ी पर ले आना पड़ा। पैखमने देखा कि व्यापारी बहुत बड़े भवनमें वास करते, तथा दिन प्रति दिन धनी होते जाते हैं।

उसने सोचा— यही रास्ता है! यदि मैं केवल पर्याप्त निज की भूमि का स्वामी हो जाऊँ तो मैं भी एक भव्य भवन निर्माण करा लूँ। मुझे इससे अधिक न चाहिये।

इसके पश्चात् वह बहुधा सोचा करता कि किस प्रकार वह भूमि मोल ले जो सर्वदा के लिये उसकी सम्पत्ति हो जाय।

तीन वर्ष व्यतीत हो गये। प्रत्येक वर्ष पैखम लगान पर खेत ले गेहूं बोता। वर्ष भले थे, खेती अच्छी हुई और पैखम ने धन

इकट्ठा करना प्रारम्भ कर दिया। वह अब बहुत ही आराम के साथ रहने लगा। किन्तु वह प्रत्येक वर्ष लगान पर खेत लेने से थक गया। जिस समय कहीं पर उपजाऊ भूमि बिकाऊ ठहरती उसी समय वहां पर क्रेता चारों ओर से दौड़ पड़ते। लेट आने वालों के लिये कुछ न बचता। एक बार उसने एक व्यापारी के साथ साझे में एक भूमि का टुकड़ा खरीदा। जिस समय खेत बोया गया उस समय विक्रेता कृषक तथा इन साझेदारों से झगड़ा उठ खड़ा हुआ और इन्हें भूमि से हाथ धोना पड़ा।

उसने सोचा— यदि भूमि मेरी निज की होती तो मैं किसी अन्य के आश्रित नहीं होता और कोई झगड़ा फ़साद भी नहीं होता।

इसलिये पैखम ने ये पता लगाना प्रारम्भ किया कि किस स्थान पर वह भूमि ख़रीदे कि वह सर्वदाके लिये उसकी हो जाय। अन्तमें उसको एक किसान मिला जिसके पास पंद्रह सौ बीघे भूमि थी किन्तु वह सस्तेमें बेंच रहा था क्योंकि वह विपत्तिमें फँस गया था। पैखमने ठीक ठाक करके १५० पौंडमें भूमि मोल ले ली। उसने आधा रुपया उसी समय दे दिया और आधा पीछे देने को ठीक हुआ। सब ठीक हो गया। उस समय एक यात्री वणिक वहां पर आया और पैखम से भोजन के लिये कुछ मांगा।

दोनों ने चाय पी कर बात चीत करना प्रारम्भ किया। व्यापारी ने कहा कि वह दूर बकशीरों के भूमि से आ रहा था और वहां पर उसने केवल सौ पौंड में पांच हजार बीघे भूमि मोल ली थी।

पैखम उत्सुकता पूर्वक उससे प्रश्न करने लगा। व्यापारी ने कहा— केवल मुखियों को अपनी ओर कर लो। मैंने उन्हें नज़राने के तौर पर केवल दो पौंड दिया और भोज में थोड़ी सी मदिरा पिला दिया। बस क्या था मुझे भूमि पांच पेंस प्रति बीघे भूमि

मिल गई। सारी भूमि एक छोटी नदी के तट पर हरी हरी घासों से आच्छादित है।

वणिक ने उसे रजिस्टरी का कागज़ भी दिखाया। पैखम उत्कण्ठित हो प्रश्न पर प्रश्न करने लगा—वहां कितनी भूमि है? उसका स्वामी कौन है?

वणिक ने कहा— वहां भूमि का अन्त नहीं है। वर्षों में तुम उसकी परिक्रमा नहीं कर सकते। सारी भूमि के स्वामी बकशीर ही हैं। वे भेड़ों की तरह मूर्ख हैं। तुम्हें भूमि कौड़ी मोल मिल जायगी।

पैखम ने विचारा—अच्छा! क्यों मैं १५०० बीघे एकड़ के लिये १५० पौंड देने जा कर ऋण का भार सिर पर लादूं। सौ ही पौंड में स्वेच्छित भूमि मिल रही है।

(५)

पैखम ने उस स्थान का मार्ग पूछ लिया और जैसे ही वणिक घर से बाहर हुआ वैसे ही यात्रा की तय्यारी करने लगा। स्त्री पर घर का भार छोड़, एक नौकर ले यात्रा कर दिया। मार्ग में एक नगर में ठहर कर चाय, मदिरा तथा वणिक के कथनानुसार भेंट की वस्तुएँ खरीद लिया। वे तीन सौ मील चले गये। सातवें दिन बकशीरों की भूमि पर उन्होंने पैर रक्खा। हर एक वस्तु वणिक के कथन के अनुसार ही थी। लोग नदी-तट पर स्थित ऊंची भूमि पर, चमड़ों के खेमों में रहते थे। न वे खेती करते थे न रोटी का मज़ा जानते थे। गायें तथा घोड़े चारों ओर चर रहे थे। बछड़े खेमों के समीप बंधे थे।

वहां स्त्रियां गायों तथा घोड़ियों को दूह कर दूध से पनीर तथा मक्खन तय्यार करतीं, घोड़ियों के दूध से 'कुम्मीस' (दूध को गर्म कर पीने योग्य) बनातीं। पुरुष काहिल, बेकार बैठे बैठे चाय तथा कुम्मीस पीते और मक्खन उड़ाया करते। समस्त पुरुष समाज बहुत

ही प्रसन्न, पेट भरे थे और काम करने का विचार ही उनको कभी नही आया। वे निरे अनभिज्ञ थे और शुद्ध रूसी भाषा भी नहीं बोल सकते थे। किन्तु वे सभी अतिथि सेवक तथा अच्छे स्वभाव के मनुष्य थे।

पैखम को देखते ही चारों ओर से दौड़ कर उसे घेर लिया। एक दुभाषिया बुलाया गया और पैखम ने उससे कहा कि वह क्यों वहां आया है। बकसीरों की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं। उन्होंने पैखम का हाथ पकड़ एक सुन्दर खेमें में ला कर उसे कालीन पर बिठाया। वे उसे घेर कर बैठ गये। उन्होंने उसे चाय तथा कुमिस दिया। एक भेड़ मारी गई।

पैखम ने भेंट की वस्तुओं को सब को बांट दिया। वे बहुत ही प्रसन्न हो आपस में बहुत देर तक बात चीत करते रहे। अन्त में उन्होंने दुभाषिये को, पैखम से बात चीत करने को, कहा।

दुभाषिये ने कहा— वे मुझसे कहने को कहते हैं कि वे आपसे अत्यन्त प्रसन्न हैं और जैसी कि यहां की चाल है कि अतिथि को हर प्रकार का आनन्द दिया जाय और उस के भेंट दिया जाय, वे जानना चाहते हैं कि आप क्या लेना पसंद करते हैं?

पैखम ने कहा—आपकी असीम भूमि का एक अंश मिल जाय यह मेरी इच्छा है। हम को भूमि की बहुत ही कमी है। जो (भूमि) है वह चिंत-चिंत तक वमी है! आपलोगों के अधिकार में यह उर्वरा भूमि इतने बड़े अंश में है। मैंने पहिले कभी ऐसी भूमी नहीं देखा था।

दुभाषिये ने बकशीरों को पैखम के कथन का अनुवाद सुना दिया। वे बात करते-करते शोर मचाने लगे। पैखम कुछ नहीं समझता था किन्तु उसने समझ लिया कि वे बहुत ही प्रसन्न हैं और वे चिल्लाते तथा हँसते हैं। अन्त में वे शान्त हुए और पैखम की ओर टकटकी लगा देखने लगे।

दुभाषियों ने कहा—वे चाहते हैं कि मैं आप से कहूं कि वे आप के इच्छानुसार जमीन आप को देंगे। जिस भूमि-खण्ड को आप चाहते हैं उसे इंगित कर दीजिये और वह आपका है।

फिर वे सब आपस में बातचीत करने लगे। इस बार वे झगड़ते से दीख पड़ते थे। पैखम ने पूछा कि इनमें मतभेद क्यों हुआ।

दुभाषिये ने कहा—कुछ लोग कहते हैं कि इस विषय में मुखिया का मत अवश्य जान लेना चाहिये और उसकी राय बिना आपको भूमि नहीं मिल सकती और कुछ लोगों का मत है कि मुखिया के बिना भी यह काम सम्पादित किया जा सकता है।

(६)

जिस समय वे आपस में बातचीत कर रहे थे उस समय एक मनुष्य सिर पर लोमड़ी के चमड़े की टोपी रक्खे उनकी ओर आ रहा था। दुभाषिये ने कहा 'ये ही हमारे मुखिया हैं'।

पैखम ने तुरन्त ही चाय की एक गठरी उसे भेंट किया और उसने उसे स्वीकार कर अपने उचित स्थानपर बैठ गया। सभों ने कहना शुरु किया। मुखिये ने देरतक सुन कर सब को चुप होने के लिये कहा। फिर उसने पैखम से रुसी भाषा में बातचीत करना प्रारम्भ किया।

मुखिया—अच्छा; ऐसा ही हो। आपको जो भूमि-खण्ड पसन्द है आप वही लीजिये। हमारे पास भूमि की कमी नहीं।

पैखम ने सोचा कैसे मैं इच्छानुसार भूमि ले लूं! कोई लिखापढ़ी होनी चाहिये जिससे यह काम निश्चल हो जाय। अन्यथा वे कहेंगे कि भूमि मेरी कैसे हुई और पीछे छीन सकते हैं।

उसने उच्च स्वर में कहा—मैं आपको धन्यवाद देता हूं। आपने ठीक कहा। यह सत्य है कि आप के पास भूमि का आधिक्य है और मुझे थोड़ी-सी भूमि की आवश्यकता है। मुझे मालूम होना

चाहिये कि कितनी भूमि मेरी हो सकती है। मैं चाहता हूं कि वह भूमि नापी भी जाय और इसकी रजिस्टरी भी हो जाय। ईश्वर हमलोगों के जीवन-मरण का परिचालक अधिकारी है, यद्यपि आप की यह असीम कृपा है कि मुझे भूमि दे रहे हैं तथापि मुझे क्यों कर विश्वास हो कि आपके लड़के फिर उसे छीन न लेंगे ?

मुखिया—आप ठीक कहते हैं। हमलोग लिखा-पढ़ी कर देंगे।

पैखम—मैंने सुना है कि आप लोगों के पास एक व्यापारी आया था और आपने भूमि तथा क्रय-पत्र भी दिया है। मैं भी ऐसा ही चाहता हूं।

मुखिया ने सब समझ लिया।—

उसने कहा—यह सब हो जायगा। हमारे पास एक लिखनेवाला है। हमलोग शहर चलकर क्रय-पत्र की रजिस्टरी कर देंगे।

पैखम ने पूछा—भूमि का मूल्य ?

मुखिया—हमलोगों ने केवल एक ही दाम रक्खा है और वह है 'सौ पौंड प्रति दिन'।

पैखम—'दिन' कौनसा नाप है ? यह कितने बीघे का होता है ?

मुखिया—हमलोग नापने की विधि से अनभिज्ञ है। हमलोग 'दिन' ही के अनुसार अपनी भूमि बेचते हैं। एक दिन में जितनी भूमिका आप परिक्रमा कर लेंगे वह आपकी होगी और उसकी कीमत वही सौ पौंड।

पैखम को बहुत ही आश्चर्य हुआ।

पैखम—यह तो बहुत है। एक दिन में विस्तृत भूमि की परिक्रमा की जा सकती है।

मुखिया ने हँसकर कहा—वह भूमि आपकी होगी। केवल उसमें एक ही शर्त है। यदि आप चले हुए स्थान पर उसी दिन नहीं लौट आयेंगे तो रुपये से आपको हाथ धोना पड़ेगा।

पैखम—मेरे परिक्रमा के मार्ग का चिन्ह क्या होगा ?

हमलोग आपके चुने हुए स्थानपर खड़े रहेंगे और तबतक आप परिक्रमा कर अपने चक्र का सीमा निर्धारित कर लीजियेगा। अपने साथ एक कुदाल लेते चलियेगा और उससे कभी-कभी, अत्र तत्र, छोटे-छोटे गढ़े बना कर मिट्टी को उनके समीप ही छोड़ दीजियेगा। इसके पश्चात् एक गढ़े से दूसरे गढ़े तक हराई फेर दी जायगी। आप वृत्त को स्वेच्छा पूर्वक बड़ी बना सकते हैं, हां केवल संध्या से पूर्व आपको उस स्थानपर आ जाना होगा जहां से आप चले थे। जितनी भूमि की आप परिक्रमा कर डालियेगा वह आपकी होगी।

पैखम बहुत ही प्रसन्न था। उसने केवल प्रारम्भ ही का निश्चय किया। तत्पश्चात् थोड़ी देर तक सब बातचीत करते रहे। भेड़ का मांस खाते तथा चाय पीते रहे, तबतक रात्रि भी आ पहुंची। सबों ने निश्चय किया किया कि दूसरे दिन सुर्योदय से प्रथम ही परिक्रमणीय स्थान पर पहुंच जायेंगे। पैखम गलीचे पर सो रहा।

(७)

पैखम रोंये के तकिये पर सर रक्खा था, किन्तु तो भी उसे नींद नहीं आई। उसके मस्तिक में भूमि के अतिरिक्त अन्य वस्तु के लिये स्थान नहीं था। उसने सोचा मुझे यथा शक्ति, जहां तक मैं घूम सकूं—परिकमा करनी चाहिये। मैं सरलता पूर्वक एक दिन में ३५ मील चल सकता हूं। इस समय दिवस वक्त के तुल्य लम्बे हो रहे हैं। मैं नहीं कह सकता कि पैंतीस मील के वृत्त में कितने बीघे होंगे। खराव भूमि को बेंच डालूंगा या काश्तकारों को बन्दोबस्त कर दूंगा। मैं आप सर्वोत्तम भूमि पर डेरा जमाऊँगा। चार बैल मोल ले लूंगा और दो हरवाहे रख लूंगा। पचास बीघे जोतूं बोऊँगा और शेष चारगाह रक्खूंगा जिसपर ढोर रक्खूंगा।

पैखम सारी रात जागता रहा। केवल प्रातःकाल के समीप उसे

थोड़ी देर के लिये झपकी आ गई। अभी आंखें पूर्णतया बंद भी न हो पाई थीं कि वह स्वप्न देखने लगा। उसने स्वप्न में देखा कि 'जहां पर वह सो रहा था उस खेमेके बाहर कोई हँस रहा है। यह जानने को कि कौन हँस रहा है वह बाहर निकला। वहां समीप ही भूमिपर मुखियेको बैठा पाया। वह दोनों हाथों से अपना पेट पकड़े था और हास्य के कारण हिल रहा था। पैखम ने समीप जाकर पूछा कि आप क्यों यों हँस रहे हैं? किन्तु उसे मालूम हुआ कि अब यह मुखिया नहीं है किन्तु वह वणिक है जिसने भूमि के विषय में उसको सब बातें बतलाई थीं। और जब पैखम उससे पूछने जा रहा था कि वह कब वहां पहुंचा, उसने देखा कि यह वणिक नहीं है बल्कि वह किसान है जो वोल्गा से आकर उसके यहां ठहरा था। तत्क्षण कृषक लापता हो गया और उसके स्थान में स्वयं शैतान आ गया। उसके खुर तथा सिंग थे और वह बैठकर हँस रहा था। उसके चरणों के समीप खाली पैर, केवल एक कमीज़ तथा पाजामा पहिने एक मनुष्य पड़ा था। पैखम ने बड़े ध्यान पूर्वक देखा—जो आदमी मरा पड़ा था वह स्वयं वही है।" पैखम भयाकुल जग पड़ा।

उसने सोचा—'यह सब स्वप्न तथा व्यर्थ की बातें हैं'। वह द्वार के बाहर झांकने के लिये उठा। ज्योति धीरे-धीरे बढ़ रही थी और प्रातःकाल के आगमन की सूचना देती थी।

उसने सोचा—चलने का समय हो गया है। सब को जगा देना आवश्यक है।

इसलिये उसने अपने नौकर को जगाकर घोड़े तय्यार करने को कहा। फिर बकसीरों को जगाने लगा।

उसने कहा—यहां से चलकर भूमि नापने का समय हो गया है।

सब बकसीर उठकर तय्यार हो गये और मुखिया भी आ पहुंचा।

वे सब क्युमिस (घोड़ी का गर्म दूध) पीने लगे। उन्होंने पैखम को भी दिया किन्तु उसने अस्वीकृत कर दिया।

(८)

सब लोग तय्यार हो गये। कुछ लोग गाड़ियों में गये, कुछ घोड़ों पर। पैखम तथा उसका नौकर गाड़ी में एक कुदाल लेकर चले। जब वे स्टेप में पहुंचे उस समय सवेरा हो रहा था। वे एक ऊंचे स्थानपर पहुंचे। गाड़ियों तथा घोड़ोंपर से उतर कर सब, साथ ही उस स्थानपर चढ़कर खड़े हो गये। मुखियाने पैखम के समीप आकर चारों ओर हाथ घुमाते हुए कहा—यह सारी भूमि, जहांतक आपकी आंखें पहुंच सकती हैं हमारी ही है। आपको जो पंसद हो वह लीजिये।

पैखम के नेत्र चमक उठे। चारों ओर घासों से हरित चरागाह ही चरागाह था। घास भुजा तुल्य मोटी थी और नीचे स्थलों में छाती ऊंची थी।

मुखियों ने अपनी टोपी उतार कर एक स्थान पर रखते हुए कहा—यहां यह टोपी चीन्ह स्वरुप पड़ी रहेगी। यहां से रवाना होकर यहीं आइये। जितनी भूमि की आप परिक्रमा कर डालियेगा वह आपकी होगी।

पैखम ने रुपया निकाल कर टोपी में रख दिया। अपने लम्बे कोट को उतार, तथा बेल्ट (पेटी) को कस डाला। कुछ रोटियां तथा शीशे के बर्तन में पानी ले कंधे से लटका लिया। बूट को ठीक कर, कुदाल ले कर चलने को तय्यार हो गया। वह सोचने लगा। वह ठीक नहीं कर पाता था कि किस दिशा की ओर जाय क्योंकि चारों ओर की भूमि फर्स्ट क्लासकी थी। उसने सोचा—कोई हर्ज नहीं! मैं सीधे पूरब जाऊंगा।

इसलिये वह प्राची दिशा की ओर मुख कर सूर्योदय की प्रतीक्षा

करने लगा। उसने विचारा मुझे एक सेकण्ड भी नहीं खोना चाहिये और जब तक ठंडा है तब तक चलना भी सहल है।

ज्योंहीं सूर्य की प्रथम किरण मैदान पर पड़ी त्यों ही पैखम कांधे पर कुदाल रख उस ऊंची भूमि से चल दिया।

पहिले वह साधारण चाल से चलता रहा। छः फर्लांग जाने के पश्चात् उसने एक छोटा गढ़ढा खोदकर खोदी हुई मिट्टी को उसके समीप चिन्ह-स्वरुप रख दिया। फिर आगे बढ़ा। अब उसके डग लम्बे-लम्बे पड़ने लगे और उसकी चाल बढ़ गई। थोड़े समय के पश्चात् उसने दूसरा गढ़ढा खोदा फिर गढ़ढे खोदते आगे बढ़ा।

उसने पिछे फिरकर देखा। ऊंची भूमि सूर्य की ज्योति में साफ दिखाई देती है। उस पर लोग खड़े थे। सूर्य के किरणों के पड़ने से पहियों के 'ढाल' चमक रहे थे। उसने अनुमान किया कि वह लगभग चार मील चल चुका होगा। उसको क्षण-क्षण गर्मी के आधिक्य का अनुभव होता था, इसलिये उसने अपना कमीज उतार कांधे पर डाल लिया। थोड़े समय पस्चात सूर्य की ओर देखा। समय जलखावे का था।

पैखम ने विचारा—दिवस का चतुर्थांश तो चला गया और अभी तीन अंश शेष है। अभी लौट चलना जल्दबाजी होगी। केवल मुझे अपने जूते उतार लेने चाहिये।

वह बैठ गया। जूतों को निकाल कर पेटी में खोंस लिया और आगे बढ़ा।

अब उसको चलने में सरलता हुई। उसने सोचा—अभी मैं चारमील सीधे जाकर लौटूंगा। बायें लौटना ठीक होगा। यह ऐसा रमणीक स्थान है कि इसको त्यागने की इच्छा नहीं होती। जितना ही दूर चला जाऊँ उतना ही अच्छा।

वह पैर बढ़ाते आगे बढ़ा। अन्त में घूमा और ऊँचे स्थान को ओर देखा। अब वह स्थान कठिणता से देख पड़ता था वहां पर खड़े मनुष्य, चलती हुई चींटियों के समान दिखाई पड़ते थे, केवल ढालों की चमक साफ दिखाई देती थी।

पैखम बिचारने लगा—इस ओर इतना पर्याप्त है। मुझे बायें ओर अवश्य घूमना चाहिये। गर्मी अधिक मालूम होती है और मैं प्यासा भी हूं।

वहां पर उसने एक बड़ा सा गढ़ढा खोदा और शीशे से पानी ढालकर पिया। बायें घूमकर आगे बढ़ा। पैर बढ़ाता गया, घास लम्बी होने लगी और अंशुमाली की उष्णता भी प्रचण्ड होने लगी। पैखम को कुछ थकावट आने लगी। उसने उपर देखा। भोजन का समय हो गया था।

उसने सोचा—मुझे थोड़ा भोजन कर लेना चाहिये। इसलिये वह बैठ गया। थोड़ी सी रोटी खाकर पानी पिया, किन्तु वह लेटने से डरता था कि कहीं नींद न आ जाय। उसने बिचारा कि यदि मै लेटता हूं तो अवश्य सो जाऊँगा।

उसने थोड़ा आराम किया और बाद को अपना रास्ता पकड़ा। पहिले वह आराम से चलता रहा। भोजन ने उसके शरीर में शक्ति संचालन कर दिया। किन्तु गर्मी बढ़ती ही गई और वह बहुत थका तथा निद्राभिभूत दीखता था। फिर भी वह सोचता हुआ आगे बढ़ा कि 'एक घंटे की तकलीफ और जीवन पर्यन्त का चैन'।

बहुत दूर तक सीधे निकल गया। ज्योंही वह घूमनेके लिये तयार हुआ त्योंही गीली भूमि नजर आया, उसने सोचा इस भूमि को छोड़ देना मूर्खता का काम होगा, यहां सन मजे में होगा। इसलिये नीची भूमि के उस पार जाकर एक गढ़ा बनाकर घूम पड़ा।

फिर वह ऊँची भूमि की ओर देखने लगा। गर्म हवा नाच रही

थी। उस प्रचण्ड गर्मी में वहां के मनुष्यों को पहिचानना उसकी शक्ति के बाहर था।

वह विचारने लगा—मैंने और किनारों को लम्बा बना दिया है। इसको अवश्य छोटा करना होगा।

वह यथा शक्ति तेज चलने लगा। सूरज की ओर देखा और तिजहरिया का समय पाया। तीसरे किनारे का अभी डेढ़ ही मील तय कर पाया था। और उसके तथा खड़े मनुष्यों के बीच में ग्यारह मिल का अन्तर था।

उसने विचारा—मैं अब आगे नहीं बढ़ सकता। मेरा भूमि-खण्ड बढ़ नहीं हो सकता। मुझे सीधे लौटना होगा, क्योंकि अब समय नहीं है। इतना ही पर्याप्त है।

इसलिये वहां एक गड्ढा खोद कर ऊंचे स्थान के लिये सीधे चला।

(६)

अब वह कठिनता से चल सकता है। उसका बदन स्वेद से तर बतर है और उसके दोनों पैर अत्र तत्र कट तथा बिंध गये हैं। उसके पैर उसको ले चलने में असमर्थ हो गये हैं। उसको आराम करने की प्रबल इच्छा होती है किन्तु वह ठहरने का साहस नहीं कर सकता। वह जानता है कि वह सुर्यास्त के पहले निश्चित स्थान पर नहीं पहुंच सकता। आह! सूरज उसके लिये नहीं ठहरेगा और वह प्रति क्षण पश्चिम ओर आकाश में नीचे ही खिसका जाता है।

उसने आह भर कर कहा—क्या मैंने दुर जाकर गलती की? यदि मैं लेट हो जाऊँ तो क्या करूंगा?

वह ऊंची भूमि की ओर देखता है फिर सूर्य की ओर। स्थान दूर है, सूर्य अस्ताचल के समीप डूब रहा है।

वह बड़े परिश्रम से आगे बढ़ता है, किन्तु फिर भी बहुत शीघ्रता

तथा तेजी दिखलाता है। अन्तमें दौड़ने लगता है। स्थान अब भी बहुत दूर है। वह कमीज़, बूट तथा टोपी को फेंक देता है और केवल कुदाल के साथ रास्ता तय करने का प्रयत्न करता है।

उसने कहा—आह! मैंने अधिक पाने का प्रयत्न किया किन्तु मैंने सब कुछ खो दिया! सुर्यास्त में अब देर कहां!

भय से उसका स्वांस रुक जाता है। वह सीधे ही दौड़ता है। उसके कमीज तथा पाजामा में पसीने के कारण शरीर से सट गये हैं। उसका मुख सुख गया है। उसकी छाती फटती सी दिखाई देती है, उसका हृदय अत्यन्त धड़क रहा है। उसके बोझ से नीचे धँस रहे हैं। भय ने पैखम को धर दबाया। कौन जानता था कि वह थकावट से मृत्यु को प्राप्त होगा?

उसे मृत्यु का भय होता है किन्तु तो भी वह रुक नहीं सकता। उसने सोचा "यदि इतना दोड़ने के पश्चात् मैं अब रुकता हूं तो वे मुझे मूर्ख कहेंगे।" अब वह समीप आ गया है और बकसीरों के हास्य तथा बातों को सुन सकता है। उनके विस्मय मिश्रित हास्य उसके हृदय को और अधिक बेधते हैं।

वह शेष शक्ति के सहारे दौड़ता है और सुरज क्षितिज के समीप कुहरे से आच्छादित रक्त बर्ण हो डूब रहा है। सूरज अब डूबा ही चाहता है किन्तु वह ऊंची भूमि भी अब बहुत ही समीप है। पैखम खड़े लोगों को अपनी ओर इशारा करते तथा हाथ हिलाते देख सकता है। वह टोपी पर रखे हुए रुपये को देखता है। वह मुखिये को भूमि पर बैठा हुआ देखता है। उसे रात्रि का स्वप्न याद आता है। वह सोचता है "मुझे आवश्यकता से अधिक भूमि हो गई किन्तु क्या मैं कभी उसका उपभोग कर सकता हूं? आह! मेरा सर्वनाश हो गया! मैं स्थान पर नहीं पहुंच सकता।

पैखम सूर्य की ओर देखता है। सूर्य का निम्न भाग पृथ्वी के

नीचे चला गया है। वह अपने को संभालता है और अन्तिम प्रयत्न करता है। वह अपने शरीर को इस प्रकार आगे झुका कर दौड़ता है कि कठिनता से वह अपने को गिरने से बचा सकता है। वह निश्चित स्थान पहुंच गया! अचानक चारों ओर अन्धकार छा जाता है। वह आंख फाड़-फाड़ कर इधर-उधर देखता है। सूरज डूब गया है। वह कष्ट पूर्वक सांस लेता है। वह सोचता है "सब छूटता है।"

पैखम रुकना ही चाहता है किन्तु वह बक्सीरों को ऊंचाई पर कोलाहल करते सुनता है; और उसे चट याद आता है कि यद्यपि वह सूरज को नहीं देख सकता किन्तु सूरज ऊंची भूमि के सर्वोत्तम भाग से अब भी देखा जा सकता है। वह ऊपर दौड़ जाता है। डूबते हुए मार्तण्ड की अन्तिम किरणें वहां अभी पड़ रही हैं। वहां टोपी है, वहां मुखिया है जो हास्य से लोट पोट हो रहा है। पैखम को स्वप्न का स्मरण हो आया, उसके पैरों ने जवाब दे दिया और वह मुंह के बल भूमि पर गिर पड़ता है। उसके हाथों में वह टोपी आ जाती है।

मुखिया ने जोरों से कहा "शाबास! महाभाग! तुमने बहुत ही उपजाऊ भूमि खण्ड ले लिया।"

पैखम का नौकर उसको सहायता देने को दौड़ता है किन्तु पैखम का जीवन समाप्त हो गया और उसके मुंह से रक्त की धारा बह चली।

बक्शीरों ने शोक प्रकट किया और पैखम के नौकर ने उसी फावड़े से कब्र खोद कर पैखम को गाड़ दिया।

आधुनिक अवतार—रामकृष्ण

बाल्यावस्था, मातेश्वरी काली और उनको संतान और ब्राह्मण पूजारी

श्री रोमा रोलां द्वारा रचित

ताल-वृक्ष-समूह, तालाब और धान के खेतों से घिरे हुए बङ्गाल के नुकीले छप्परयुक्त कामारपुकर नामक ग्राममें एक बहुत दरिद्र पर धार्मिक कट्टर सनातनी ब्राह्मण चट्टोपाध्याय दम्पति मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रके अनन्य भक्त निवास करता था। पिता खुदीराम इतने सत्यवादी थे कि इन्हें अपनी सारी सम्पत्ति से इसलिये हाथ धोना पड़ा कि वे अपने जमीन्दार के लिये जिनके यहां नौकरी करते थे झूठी गवाही न दे सके। देवताओं का उनके यहां शुभागमन हुआ। उन्होंने करीब ६० वर्ष की अवस्था में भगवान विष्णु के पवित्र स्थान एवं बुद्ध-पद-चिन्ह विभूषित गयाधाम की तीर्थ-यात्रा की।

रात्रि में अशरण-शरण भगवान प्रकट हुए और बोले—"मैं मानव समाज के परित्राण के लिये पुनः जन्म-ग्रहण करता हूं।"

उसी समय कामारपुकर में उनकी स्त्री चन्द्रमणि ने अपने एकान्त शय्या पर स्वप्न देखा कि किसी देव ने उनको आलिङ्गन कर लिया। झोपड़ी के सामने शिव-मन्दिर में उस देवता की मूर्ति उनकी आखों-के सामने साक्षात खड़ी हुई। एक तेजोमय प्रकाश निकल कर उनके शरीर में प्रवेश किया और उस स्वर्गीय टक्कर से चन्द्रमणि आनन्द विह्वल हो स्मृति विभोर हो गईं। जब उस भगवद्-प्रिया को होश हुआ तो वह गर्भवती थी। तीर्थयात्रा से लौटने पर पतिने चन्द्रमणि-को बिल्कुल बदला हुआ पाया। वह अन्तर ध्वनि सुना करती थी उसके हृदय में एक देवता का वास था।

१८३६ की १८ वीं फरवरी को लड़का पैदा हुआ, जो पीछे संसार

में रामकृष्ण के नाम से प्रसिद्ध हुआ। किन्तु उसका सुखद बाल्यकाल गदाधर के नाम से व्यतीत हुआ। वह बाल्य-सुलभ चंचलता, स्त्री-सुलभ सुन्दरता और प्रसन्नता से वेष्टित था। इस हँसमुख बालक की अन्तरात्मा की असीम महानता को इसके लड़कपन की शरारत के कारण किसीने स्वप्न में भी—वह तो और भी नहीं—सन्देह किया। पर जब वह आठ वर्ष का हुआ तो सर्व प्रथम इसका उसे परिचय मिला, जब कि एक दिन सन् १८४२ ई० के जून या जुलाई महीने में अपने धोती में थोड़ी सी मूढ़ी लिये वह चिड़ियों की तरह आनन्द पूर्वक खाते एवं दिन व्यतीत करते हुए अपने पिता के पास खेत में जा रहा था जहां कि वे काम कर रहे थे। (उस दिन की घटना का उन्होंने इस प्रकार उल्लेख किया है)

"मैं धान के खेत के मेड़ के तङ्ग रास्ते से जा रहा था। खोई को चबाते हुए मैंने अपने मुंह को ऊपर की ओर उठाया। मैंने एक सुन्दर तूफानी बादल को बड़ी तेजी से फैलते हुए देखा। यह समूचे नभःमण्डल में फैल गया। अचानक बादलों के एक छोर से दूध के समान सफेद सारसों का एक दल मेरे सिर के ऊपर उड़ते हुए आया। यह छटा इतनी मनोमुग्धकर थी कि मेरी अन्तरात्मा सुदूर नभः-मण्डल में फंस गयी और मैं सँज्ञाहीन हो कर गिर पड़ा; खोई जमीन पर चारों ओर बिखर गई। पर किसी व्यक्ति ने मुझे अपनी गोदी में उठा कर मेरे घर में पहुंचा दिया। अत्यधिक प्रसन्नता और भावों की कमनीयता ने मुझे आनन्द-विभोर कर दिया। सर्व प्रथम मैंने यहीं परमानन्द का रसास्वादन किया।"

जीवन के आधे से अधिक समय को इसी अवस्था में व्यतीत करना ही उनके भाग्य में बदा था।

इस पहली समाधि से इस बालक की आत्मा पर ईश्वर-अनुभूति का भण्डा फूट गया। कलाका अभिज्ञान और सुन्दरता के प्रति

स्वाभाविक आकर्षण उसके ईश्वर के प्रति खिंचाव का प्रथम मार्ग था। अपने पड़ोसी का आदर्श के प्रति प्रेम, इन्द्रिय दमन, सच्ची लगन के साथ निस्वार्थ भक्ति या दया अथवा समाधि...इत्यादि ईश्वर अनुभूति के मार्ग हैं। यह सब वे क्रमशः जानेंगें; पर दुनिया की सभी चीजों में ईश्वर की स्थिति का आभास उनका स्वाभाविक और सर्व प्रधान गुण था। वे जन्मसे ही कला प्रेमी थे। आह! भारत की दूसरी महान आत्मा—कला एवं स्वप्न-रहित व्यक्ति जिसमें ये बातें एक भी नहीं हैं, जो उनमें प्राय अविश्वास करता है, पर जो अपने कामों द्वारा ईश्वर में निवास करता है—महात्मा गांधी (मैं जिनका धर्म प्रचार यूरोप में हालही से कर रहा हूं) से उनमें कितनी विभि-न्नता है। इनका मार्ग निश्चित और निरापद है, और है भारत के कर्णधार के योग्य। रामकृष्ण का मार्ग इससे बहुत ही ज्यादा खतर-नाक है सही पर यह कितनी दूर असीम की छोर के पार पहुंचा देता है! यह प्रेम का मूर्तिमान मार्ग है।

यह बंगाल के लोगों का मार्ग है, यह उनके जन्मभूमि के कला और कविता प्रेमी लोगों का मार्ग है जो श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त चैतन्य महाप्रभु और मधुर एवं सुन्दर संगीत शास्त्र के रचयिता चण्डीदास और विद्यापति के नेतृत्व में विकसित हुई है।

वे पवित्रात्मा, देश के सुगन्धित पुष्प, जिन्होंने अपनी मधुर सुगन्धि से देश को सुवासित कर दिये हैं। शताब्दियों से बंगाल उस गन्ध-मद से मस्त है। रामकृष्ण की छोटी आत्मा भी उन्हीं तत्त्वों से बनी थी और उनका शरीर भी वहीं का था। चैतन्य रूपी वृक्ष की शाखा कुसुमित हुई।

स्वर्गीय सुन्दरता का प्रेमी, मूर्तिमान कला प्रेमी दूसरी बार समाधि में आत्मविभोर हुआ। कविता और संगीत-विद्या-प्रेमी आठ वर्ष का बालक एक दिन शिवरात्रि को अपने समवयस्क बालकों के एक

दल का अगुआ बनकर नाटक खेल रहा था। वह महादेव बना था कि अचानक उसका मन भगवान शिव की ओर आकर्षित हो गया। इसके सुन्दर कपोलों पर प्रेमाश्रु बहने लगे और ईश्वरानन्द अनुभूति में वे समाधिस्थ हो गये। लोगोंने सोचा कि बालक मर गया।

इसके बाद तो उनकी समाधि बहुधा लगने लगी। यूरोप में तो इस रोग के निदान का उपाय शिघ्रातिशीघ्र होने लगता। वह अस्पताल के जाँच विभाग में डाक्टरों के अनुसन्धान का पात्र बनता और इस प्रकार उसकी प्रतिभा क्रमशः समूल नष्ट हो जाती......। झाड़-फूंक सब व्यर्थ! जीवन प्रदीप बुझ गया—कभी-कभी बालक मर भी जाता। भारतवर्ष में भी जहां शताब्दियों से ऐसे आश्चर्य काण्ड हुआ करते हैं—चिन्ता हुई। इनके माता पिता ने भी जो देव-दर्शन के आदी थे इस समाधि को शंकित नयनों से देखा।

पर इस परिवर्तन के होते हुए भी वे पूर्ण स्वस्थ थे। वे सयाने नहीं थे पर थे बहुत गुणी। उनकी निपुण अंगुलियां मिट्टी से देवताओं की सृष्टि करती थीं। वीरों की कहानियां उनके विचारों को उत्तेजित कर देती थी, श्रीकृष्ण के प्रामक गीतों को बड़े प्रेम से गाते थे; कभी-कभी वे पंडितों से बड़ी सुन्दरता पूर्वक बहस करते थे और उन्हें इस प्रकार आकर्षित कर देते थे जैसे कान्ह ने पंडितों को कर दिया था।

इन दैवी गुणों को दिखलाते हुए भी वे जानते थे कि किस प्रकार से लड़का ही रहा जा सकता है। लड़कपन भी इनमें कूट-कूट कर भरा था। इस सुन्दर बालक को जिसके लम्बे बाल हवा में उड़ा करते थे जिसकी मोहनी मुस्कुराहट और मधुर वाणी जादू का असर करती थी और जो स्कूल न जाकर इधर-उधर घूमना ही पसन्द करता था—१३ वर्ष की अवस्था तक स्त्रियां और युवती लड़कियां उसे बहुत ही लाड़ प्यार करती और चाहती थीं। वे उन्हें अपनी जाति का समझती और वे भी उनके स्वभाव से इतने मिलते-जुलते थे कि श्रीकृष्ण और गोप कुमारियों की कथा के आधार पर इनके लड़कपन की यह अभिलाषा थी कि वे एक छोटी विधवा-रूपमें पुनः पैदा होते और श्रीकृष्ण की प्रेयसी बनने का सौभाग्य प्राप्त करते। (श्रीकृष्ण इनसे मिलने आया करते।)

उनकी अनगिनत कल्पनाओं में से यह एक उदाहरण मात्र है।

इनकी छोटी अवस्था ही में इनके पिता मर गये। जीविका का कोई सहारा नहीं रहने के कारण इनके परिवार को बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इनके सबसे बड़े भाई कलकत्ता गये और वहां एक टोल स्थापित किया। उन्होंने अपने छोटे भाई को भी १८५२ ई० में बुला भेजा। पर पढ़ने का विद्रोही युवक गदाधर ने—जिसके हृदय में कल्पनाओं की तरंगे उठा करती थी—पढ़ने से इन्कार कर दिया। उसी समय नीच कुलोत्पन्ना महिला रानी रासमनी ने कलकत्ते से ४ मील पर गंगा नदी के दाहिने किनारे पर मातेश्वरी काली का मंदिर बनवाया। उन्हें ब्राह्मण पुजारी पाने में बड़ी अड़चन पड़ी। यह बात हमलोगों के लिये आश्चर्यजनक अवश्य है पर साधु सन्यासी-भक्त भारत वर्ष में वेतन-भोगी पुजारी का काम निन्दित समझा जाता है। वहां के मन्दिर यूरोप के गिरिजाघरों की तरह नहीं है। मंदिर ईश्वर के आवास और उनका विहारस्थान हैं। धनी मन्दिर आदि बनवाकर अपना नाम अमर करते हैं। पर सच्चा धर्म फिर भी इनसे परे है जिसका कि प्रत्येक हृदय में निवास है।

(क्रमशः)

मणिमाला।

('कल्याण' से)

मन के निग्रह करने से योगी को निर्भयता, दुःखों का अभाव, ज्ञान और अक्षय शान्ति की प्राप्ति होती है...अतएव निरन्तर प्रयत्न कर के मनका निग्रह करना चाहिये। —उपनिषद्।

यह अस्थिर और चञ्चल मन ज्यों ज्यों संसार में जाय, त्यों ही त्यों इसे लौटाकर परमात्मा में लगाना चाहिये। —श्रीमद्भगवद्गीता।

जिस पुरुष का मन कामादि विषयों से हारा हुआ नहीं होता, वही योग की साधना कर सकता है। कामादि विषयों से पराजित मनवाला मनुष्य योग-साधन नहीं कर सकता। —महाभारत।

जो पुरुष ईश्वर के तत्त्व से अनभिज्ञ लोगों को अमृतरूप ज्ञान का प्रकाश दिखलाकर सत्मार्गपर ले जाता है उस दयालु दीनबन्धु पुरुषपर सभी देवगण कृपा करते हैं। —मैत्रेय।

विषयसुख घने बादलों में चमकनेवाली बिजली की भाँति चञ्चल है, हमारी आयु हवा से बिखरे हुए बादलों के जल के सदृश क्षणस्थायी है और यह जवानी की लालसा भी शीघ्र ही नष्ट हो जायगी, इसलिये बुद्धिमान् को चाहिये कि वह मन को धैर्य के साथ एकाग्र कर के परमात्मा की प्राप्ति के लिये लगावे। —भर्तृहरि।

प्राणघात, चोरी और व्यभिचार, ये तीन शारीरिक पाप हैं, असत्य, निन्दा, कटुभाषण और व्यर्थभाषण, ये चार वाणी के पाप हैं और परधन की इच्छा, दूसरे के अनिष्ट की इच्छा तथा सत्य, अहिंसा, दया, दान आदि में अश्रद्धा, ये तीन मानसिक पाप हैं।

—बुद्धदेव।

विवेक हो तो बस्ती में रहने में भी धर्म है और जंगल में रहने में भी, विवेक बिना दोनों में ही अधर्म है। —महावीर स्वामी।

जो दयालु हैं, उन्हींपर भगवान् की दया होगी; जिसका मन शुद्ध है, उन्हींको भगवान् के दर्शन होंगे; जो धर्म के लिये सताये जाते हैं, स्वर्ग का राज्य उन्हींका होगा और जो धर्म के पिपासु हैं, उन्हींकी तृप्ति होगी। —ईसामसीह।

जब तुम सांसारिक कामनाओं को छोड़ दोगे, तभी शोक और दुःख से छूटकर सच्चे सुख और शान्ति को पा सकोगे।

—मन्सूर उमर।

हे जीव! यदि तू भगवान् की इच्छानुसार चलना चाहता है तो उसकी शरण के सिवा और कोई उपाय नहीं है। जो मनुष्य अपनी इच्छानुसार अपने को चलाना चाहता है वह स्वयं अपने को धोखा देता है। —मोलिन्स।

जिसमें जितना प्रेम है, वह उतना ही ईश्वर के समीप पहुंचा हुआ है—उतने अंश में वह प्रभुमय बन गया है, क्योंकि प्रभु स्वयं अपार प्रेममय हैं। —राल्फ वाल्डो ट्राइन।

जगत् में छोटे ही सुखी हैं, ग्रहण चन्द्रमा और सूर्य को ही लगता है, तारे तो आकाश में सुख से रहते हैं, इसलिये साधु दीनता चाहते हैं और दुष्ट मान चाहते हैं। —सहजोबाई।

जिनके हृदय में दया और धर्म बसते हैं, जो अमृत-वाणी बोलते हैं और जिनके नेत्र नम्रतावश नीचे रहते हैं, असल में वे ही ऊँचे हैं। —मलूकदास।

हे मेरी आत्मा के प्रियतम स्वामी! मैं तुमको ही चाहूंगी, मुझे और कोई भी वस्तु प्यारी न लगने दो, जो वस्तुएँ मुझे तुम से दूर हटाती हों, वे मुझे जहर-सी लगने लगें। एकमात्र तुम्हारी इच्छा ही मेरे लिये मधुर हो,—तुम्हारी इच्छा ही मेरी इच्छा बन जाय!

—एलिजाबेथ।

—०—

कुम्भ के अवसर पर रामकृष्ण मिशन का सेवाकार्य।

समन्वय प्रेमियों को मालूम होगा कि आगामी मकर संक्रान्ति के अवसर पर तीर्थराज प्रयाग में कुम्भ का मेला होनेवाला है। इस अवसर पर हजारो नहीं, वरं लाखों सनातनधर्मावलम्बी त्रिवेणी स्नान और श्री अक्षयवट तथा वेणीमाधव के दर्शनार्थ वहां उपस्थित होंगे। इसलिये वहां यात्रियों की सेवा, सहायता, औषधि प्रदान तथा भूले भटके यात्रियों को सहायता की कितनी आवश्यकता है, यह भी किसी से छिपी नहीं। फलतः यात्रियों के सेवा के लिये श्रीरामकृष्ण मिशन की ओर से स्वयंसेवकों का एक दल प्रयाग भेजा गया है और उसने अभी से अपना सेवाकार्य प्रारंभ कर दिया है। यह सभी जानते हैं कि इस सेवाकार्य के लिये विपुल अर्थ, वस्त्र तथा अन्न आदि की आवश्यकता है। इसलिये सेवा-धर्म के प्रेमी सर्व साधारण से निवेदन है कि इस पुण्यकार्य में आर्थिक साहाय्य प्रदान कर मिशन के स्वयंसेवकों का हाथ बँटायें। इस कार्य के लिये निम्न लिखित पते से जो कुछ भी आप भेजेंगे वह सादर और सधन्यवाद ग्रहण किया जायेगा। आशा और प्रार्थना है कि सर्वसाधारण इस पवित्र कार्य में मिशन की सहायता करके यश और पुण्य के भागी बनेंगे।

सहायता भेजने के पते—

(१) सेक्रेटरी, श्रीरामकृष्ण मिशन
पो० बेलूड़ (हवड़ा)

(२) मनेजर, अद्वैत आश्रम
१८२, मुक्तारामबाबु स्ट्रीट, कलकत्ता।

समन्वय

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः॥ —गीता।

वर्ष ८] सौर मार्गशीर्ष, सम्वत् १९८६ [अङ्क ११

श्रीरामकृष्णवचनामृत।

(३)

भक्त। ब्रह्मसमाज के आदमी कहते हैं, संसार का कर्म करना ही अपना कर्तव्य है। इस कर्म के त्याग करने से कुछ न होगा।

गिरीश। मैंने देखा, सुलभसमाचार में यही बात लिखी है। परन्तु ईश्वर को जानने के लिये जो कर्म हैं, वही नहीं पूरे किये होते, तिस पर दूसरे कर्म!

श्रीरामकृष्ण जरा मुस्कराकर मास्टर की ओर हेर कर ईशारा कर रहे हैं,—'वह जो कुछ कहता है, वही ठीक है।'

मास्टर समझ गये, कर्मकाण्ड बड़ी ही कठिन है।

पूर्ण आये हुए हैं।

श्रीरामकृष्ण। किसने तुम्हें खबर दी?

पूर्ण। सारदा ने।

श्रीरामकृष्ण (पासकी स्त्री-भक्तों से)। इसे कुछ जलपान करने के लिये देना।

अब नरेन्द्र का गाना होगा। श्रीरामकृष्ण और भक्तों को सुनने की इच्छा है। नरेन्द्र गा रहे हैं—